भजन संग्रह
भाग ३

भजन-संग्रह

(तीसरा भाग)

मूल्य ≈)

प्रथम संस्करण ५०००

सं० १९८८

द्वितीय संस्करण ५०००

सं० १९८९

तृतीय संस्करण ५०००

सं० १९९१

चतुर्थ संस्करण ५०००

सं० १९९४

मुद्रक तथा प्रकाशक

घनश्यामदास जालान

गीताप्रेस, गोरखपुर

❀ श्रीहरिः ❀

वक्तव्य

भजन-संग्रहका यह तीसरा भाग है। इसमें कुछ हरि-भक्त देवियोंकी दिव्य बानियोंका संक्षिप्त संकलन किया गया है। ये बानियाँ भी अनूठी हैं। प्रेम-मूर्ति मीराके पद तो, बस, अनुपम हैं। लगन-बानकी मारी वह दीवानी मीरा अपने प्यारे गिरिधर गोपालको गा-गाकर कैसी रिझा रही है, यह हमें उसके सरस पदोंमें प्रत्यक्ष दिखायी देता है। निर्विकार विशुद्ध प्रीतिकी रीति हम पगली मीराकी अनुराग-रँगी बानीसे ही सीख सकते हैं। इन

पदोंके बाद हमने महात्मा चरणदासकी शिष्या सहजोबाईके कुछ बिखरे हुए शब्द-रत्नोंको इस पद-मालामें पिरोया है। ये पद भी बड़े टकसाली हैं। फिर वृन्दावन-वासिनी बनीठनीजी, प्रतापबालाजी तथा युगल-प्रियाजीकी सुधा-सनी बानियोंमें कुछ पद संगृहीत किये हैं। श्रीयुगलप्रियाजीके चरणोंमें संग्रहकारका थोड़ा-सा गुरु-भाव है, अतः पक्षपातका दोष तो उसके मत्थे मढ़ा ही जायगा। अस्तु, युगलप्रियाजीकी बानीको संग्रहकार उन भक्त देवियोंकी दिव्य बानियोंमें रखनेका दुस्साहस करता है, जिन्होंने भगवान्के सुमधुर प्रेमका प्रत्यक्ष अनुभव करके अपनी पवित्र वाणीके द्वारा

संसार-संतप्त जीवोंको सुशीतल शान्ति-रस देनेका प्रयास किया है।

हमारा विश्वास है कि भजन-संग्रहके प्रेमी पाठक इस भागका भी उसी प्रेम-भक्ति-से पारायण करेंगे, जिससे उन्होंने पहले और दूसरे भागको अपनाया है। जगत्को इन हरि-भक्त देवियोंकी विमल वानियोंसे शान्ति और आनन्दकी प्राप्ति हो यही भव-भय-हारी भक्त-वत्सल भगवान्से हमारी प्रार्थना है।

मोहननिवास, पन्ना } वियोगी हरि

निवेदन

यह चौथा संस्करण है । इसके तीसरे संस्करणमें दूसरे संस्करणकी अपेक्षा ११६ भजन अधिक बढ़ाये गये थे, पहले मीराबाईजीके केवल ६७ भजन थे, वे १३३ कर दिये गये। इसके सिवा श्रीमञ्जुकेशीजीके ५० पद नये बढ़ाये गये थे। परिशिष्टमें कठिन शब्दोंके अर्थके कई पृष्ठ बढ़ गये हैं । इस संस्करणमें जिन पदोंपर तालसहित रागकी कमी थी उसे भी पूरा करके इसकी उपयोगिता और बढ़ा दी गयी है। दाम वही है । आशा है, पाठक इससे विशेष लाभ उठावेंगे ।

प्रकाशक

* श्रीहरिः *

अकारादि-क्रमसे विषय-सूची

भजन पृष्ठ-संख्या

१–मीराबाईजी

२–सहजोबाईजी

भजन पृष्ठ-संख्या

३-मञ्जुकेशीजी

४-बनीठनीजी

५-प्रतापबालाजी

६-युगलप्रियाजी

७-रामप्रियाजी

८-रानी रूपकुँवरिजी



ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

भजन-संग्रह

(तीसरा भाग)

मीराबाईजी

प्रार्थना

(१) राग श्याम कल्याण-ताल रूपक

हरी तुम हरो जनकी भीर ।
द्रोपदीकी लाज राखी तुरत बढ़ायो चीर ॥
भगत कारण रूप नरहरि धरयो आप सरीर ।
हिरण्याकुश मारि लीन्हों धरयो नाहिन धीर ॥
बूड़तो गजराज राख्यौ कियौ बाहर नीर ।
दासी मीरा लाल गिरधर चरणकँवलपर सीर ॥

(२) राग दरबारी–ताल तिताला

तुम सुणो दयाल म्हाँरी अरजी ।
भवसागरमें बही जात हूँ काढ़ो तो थाँरी मरजी ।
इण संसार सगो नहिं कोई साँचा सगा रघुबरजी ॥
मात पिता औ कुटम कबीलो सब मतलबके गरजी ।
मीराकी प्रभु अरजो सुण लो चरण लगाओ थाँरी मरजी॥

(३) राग पीलू–ताल कहरवा

हमने सुणी छै हरी अधम उधारण ।
अधम उधारण सब जग तारण । टेक ।
गजकी अरज गरज उठ ध्यायो,
संकटपड़यौतबकष्टनिवारण ॥ १ ॥
द्रुपदसुताको चीर बधायो,
दूसासनको मान पद मारण ।
प्रहलादकी परतिग्या राखी,
हरणाकुस नख उदर बिदारण ॥ २ ॥

रिखिपतनीपर किरपा कीन्हीं,
बिप्र सुदामाकी बिपति बिदारण ।
मीराके प्रभु मों बंदीपर,
एति अवेरि भई किण कारण ॥ ३ ॥

(४) राग बिहाग-ताल दीपचन्दी

स्याम मोरी बाँहड़ली जी गहो ।
या भवसागर मँझधारमें थे ही निभावण हो ॥
म्हाँमें औगण घणा छै हो प्रभुजी थे ही सहो तो सहो ।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी लाज बिरदकी वहो ॥

(५) राग सारंग-ताल कहरवा

मैं तो तेरी सरण परी रे,
रामा ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार ।
अडसठ तीरथ भ्रम भ्रम आयो,
मन नहिं मानी हार ॥ १ ॥
या जगमें कोई नहिं अपणा
सुणियौ श्रवण मुरार ।

मीरा दासी राम भरोसे
जमका फंदा निवार ॥२॥

(६) राग धुन पीलू-ताल कहरवा

हरि बिन कूण गती मेरी।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ॥
आदि अंत निज नाँव तेरो हीयामें फेरी।
बेर बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी ॥
यौ संसार बिकार सागर बीचमें घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाळ बाँधो बूडत है बेरी ॥
बिरहणि पिवकी बाट जोवै राखल्यो नेरी।
दासि मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी ॥

(७) राग भैरवी-ताल कहरवा

अब मैं सरण तिहारी जी,
मोहिं राखौ कृपानिधान ॥टेक॥
अजामील अपराधी तारे,
तारे नीच सदान।

जळ डूबत गजराज उबारे,
गणिका चढ़ी बिमान ॥ १ ॥
और अधम तारे बहुतेरे,
भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भीलणी तारी,
जाणै सकल जहान ॥ २ ॥
कहँ लग कहूँ गिणत नहिं आवै,
थकि रहे वेद पुरान ।
मीरा दासी सरण तिहारी,
सुनिये दोनों कान ॥ ३ ॥

(८) राग पहाड़ी–ताल कहरवा

प्रभुजी मैं अरज करूँ छूँ
मेरो बेड़ो लगाज्यो पार ॥
इण भवमें मैं दुख बहु पायो
संसा-सोग-निवार ।
अष्ट करमकी तलब लगी है
दूर करो दुख-भार ॥ १ ॥

यों संसार सब बह्यो जात है
लख चौरासी री धार ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
आवागमन निवार ॥ २ ॥

(९) राग प्रभाती–ताल चर्चरी

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर-नाजिर कदकी खड़ी ॥टेक॥
साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या,
सबने लगूँ कड़ी ।
तुम बिन साजन कोई नहिं है,
डिगी नाव मेरी समँद अड़ी ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन रैण नहिं निंदरा,
सूखूँ खड़ी खड़ी ।
बाण बिरहका लग्या हियेमें,
भूलूँ न एक घड़ी ॥ २ ॥

पत्थरकी तो अहिल्या तारी,
बनके बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरामें कहिये,
सौ पर एक घड़ी ॥ ३ ॥

(१०) राग सहाना-ताल चर्चरी

मीराको प्रभु साँची दासी बनाओ ।
झूठे धंधोंसे मेरा फंदा छुड़ाओ ॥ १ ॥
लूटे ही लेत विवेकका डेरा ।
बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा ॥ २ ॥
हाय ! हाय ! नहिं कछु बस मेरा ।
मरत हूँ विबस प्रभु धाओ सवेरा ॥ ३ ॥
धर्म-उपदेस नितप्रति सुनती हूँ ।
मन कुचालसे भी डरती हूँ ॥ ४ ॥
सदा साधु सेवा करती हूँ ।
सुमिरण ध्यानमें चित धरती हूँ ॥ ५ ॥
भक्ति मारग दासीको दिखलाओ ।
मीराको प्रभु साची दासी बनाओ ॥ ६ ॥

(११) राग सारंग-ताल तिताला

सुण लीजो बिनती मोरी,
मैं सरण गही प्रभु तोरी ॥ १ ॥
तुम (तो) पतित अनेक उधारे,
भवसागरसे तारे ॥ २ ॥
मैं सबका तो नाम न जानूँ,
कोइ कोई नाम उचारे ॥ ३ ॥
अम्बरीष सुदामा नामा,
तुम पहुँचाये निज धामा ॥ ४ ॥
ध्रुव जो पाँच वर्षके बालक,
तुम दरस दिये घनस्यामा ॥ ५ ॥
धना भक्तका खेत जमाया,
कबिराका बैल चराया ॥ ६ ॥
सबरीका जूँठा फळ खाया,
तुम काज किये मनभाया ॥ ७ ॥
सदना औ सेना नाई-
को तुम कीन्हा अपनाई ॥ ८ ॥

करमाको खिचड़ी खाई,
तुम गणिका पार लगाई ॥ ९ ॥
मीरा प्रभु तुमरे रँग राती,
या जानत सब दुनियाई ॥१०॥

(१२) राग आसावरी-ताल तिताला

प्यारे दरसन दीज्यो आय,
तुम बिन रह्यो न जाय ॥टेक॥
जळ बिन कमल चंद बिन रजनी,
ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी ।
आकुळ व्याकुळ फिरूँ रैन दिन,
बिरह कलेजो खाय ॥ १ ॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैना,
मुखसूँ कथत न आवै बैना ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवै,
मिलकर तपत बुझाय ॥२॥
क्यूँ तरसावो अंतरजामी,
आय मिलो किरपा कर स्वामी ।

मीरा दासी जनम जनमकी,
पड़ी तुम्हारे पाय ॥३॥

(१३) राग रामकली-ताल तिताला

अब तो निभायाँ सरेगी,
बाँह गहेकी लाज ।
समरथ सरण तुम्हारी सइयाँ,
सरब सुधारण काज ॥ १ ॥
भवसागर संसार अपरबल,
जामें तुम हो झथाज ।
निरधाराँ आधार जगत-गुरु,
तुम बिन होय अकाज ॥ २ ॥
जुग जुग भीर हरी भगतनकी,
दीनी मोक्ष समाज ।
मीरा सरण गही चरणनकी,
लाज रखो महाराज ॥ ३ ॥

(१४) राग सूहा-ताल कहरवा

स्वामी सब संसारके हो साँचे श्रीभगवान ।

स्थावर जंगम पावक पाणी धरती बीज समान ।
सबमें महिमा थाँरी देखी कुदरतके करवान ॥
विप्र सुदामाको दाळद खोयो बालेकी पहचान ।
दो मुट्ठी तंदुलकी चाबी दीन्ह्यों द्रव्य महान ॥
भारतमें अर्जुनके आगे आप भया रथवान ।
अर्जुन कुळका लोग निहारया छुट गया तीर कमान॥
ना कोई मारे ना कोई मरतो, तेरो यो अग्यान ।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यो गीतारो ग्यान ॥
मेरेपर प्रभु किरपा कीजो, बाँदी अपणी जान ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरण-कँवलमें ध्यान ॥

बिरह

(१५) राग प्रभाती-ताल चर्चरी

राम मिलण रो घणो उमावो
नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ ।
दरस बिना मोहि कछु न सुहावै
जक न पड़त है आँखड़ियाँ ॥१॥

तडफत तडफत बहु दिन बीते
पड़ी बिरहकी फाँसड़ियाँ ।
अब तो बेग दया कर प्यारा
मैं हूँ थारी दासड़ियाँ ॥२॥
नैण दुखी दरसणकूँ तरसैं
नाभि न बैठे सासड़ियाँ ।
रात दिवस हिय आरत मेरो
कब हरि राखै पासड़ियाँ ॥३॥
लगी लगन छूटणकी नाहीं
अब क्यूँ कीजै आँटड़ियाँ ।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे
पूरौ मनकी आसड़ियाँ ॥४॥

(१६) राग जैजैवंती-ताल चर्चरी

गळी तो चारों बंद हुई,
मैं हरिसे मिलूँ कैसे जाय ।
ऊँची नीची राह लपटीली,
पाँव नहीं ठहराय ।

सोच सोच पग धरूँ जतनसे,
बार-बार डिग जाय ॥१॥
ऊँचा नीचा महल पियाका
म्हासूँ चढ्यो न जाय।
पिया दूर पंथ म्हाँरो झीणो,
सुरत झकोळा खाय ॥२॥
कोस कोसपर पहरा बैठ्या,
पैंड पैंड बटमार।
हे बिधना कैसी र[illegible] दीनी
दूर बसायो म्हाँरो गाँव ॥३॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर
सतगुरु दई बताय।
जुगन जुगनसे बिछड़ी मीरा
घरमें लीनी लाय ॥४॥

(१७) राग जोगिया-ताल दीपचंदी

हे री मैं तो दरद दिवानी
मेरो दरद न जाणै कोय।

घायलकी गति घायल जाणै
जो कोइ घायल होय ।
जौहरिकी गति जौहरी जाणै
की जिन जौहर होय ॥१॥
सूली ऊपर सेज हमारी
सोवण किस बिध होय ।
गगन मँडलपर सेज पियाकी
किस बिध मिलणा होय ॥२॥
दरदकी मारी बन-बन डोलूँ
बैद मिल्या नहिं कोय ।
मीराकी प्रभु पीर मिटेगी
जद बैद साँवळिया होय ॥३॥

(१८) राग माँड़-ताल कहरवा

नातो नामको जी म्हासूँ
तनक न तोड़्यो जाय ।

पानाँ ज्यूँ पीळी पड़ी रे,
लोग कहें पिंड रोग ।
छाने लाँघण म्हैं किया रे,
राम मिलणके जोग ॥१॥
बाबळ बैद बुलाइया रे,
पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह ।
मूरख बैद मरम नहिं जाणे,
कसक कळेजे माँह ॥२॥
जा बैदाँ घर आपणे रे,
म्हाँरो नाँव न लेय ।
मैं तो दाझी बिरहकी रे,
तू काहेकूँ दारू देय ॥३॥
माँस गळ गळ छीजिया रे,
करक रह्या गळ आहि ।
आँगळियाँ री मूदड़ी,
(म्हारे) आवण लागी बाँहि ॥४॥

रह रह पापी पपीहड़ा रे,
पिवको नाम न लेय ।
जे कोइ बिरहण साम्हले तो,
पिव कारण जिव देय ॥५॥
खिण मंदिर खिण आँगणे रे,
खिण-खिण ठाढी होय ।
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी,
(म्हारी) बिथा न बूझै कोय ॥६॥
काढ कलेजो मैं धरूँ रे,
कागा तू ले जाय ।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै रे,
वे देखै तू खाय ॥७॥
म्हाँरे नातो नाँवको रे,
और न नातो कोय ।
मीरा ब्याकुळ बिरहणी रे,
(हरि) दरसण दीजो मोय ॥८॥

(१९) राग कामोद-ताल तिताला

आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी ।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ॥
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ॥

(२०) राग बिहाग-ताल चर्चरी

माई म्हारी हरिजी न बूझी बात ।
पिंड माँसूँ प्राण पापी निकस क्यूँ नहीं जात ॥
पट न खोल्या मुखाँ न बोल्या साँझ भई परभात ।
अबोलणा जुग बीतण लागो तो काहेकी कुशलात ॥
सावण आवण होय रह्यो रे नहिं आवणकी बात ।
रैण अँधेरी बीज चमंकै तारा गिणत निसि जात ॥
सुपनमें हरि दरस दीन्हों मैं न जाण्यूँ हरि जात ।
नैण म्हाराँ उघड़ आया रही मन पछतात ॥

लेइ कटारी कंठ चीरूँ करूँगी अपघात ।
मीरा व्याकुळ बिरहणी रे बाल ज्यूँ बिललात ॥

(२१) राग पहाड़ी-ताल कहरवा

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राणजी, कासूँ जीवण होय ॥
धान न भावै नींद न आवै, बिरह सतावै मोय ।
घायल-सी घूमत फिरूँ रे, मेरो दरद न जाणै कोय ॥
दिवस तो खाय गमाइयो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमाया झूरताँ रे, नैण गमाया रोय ॥
जो मैं ऐसी जाणती रे, प्रीति कियाँ दुख होय ।
नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीति करो मत कोय ॥
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय ।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ॥

(२२) राग देस बिलंपत-ताल तिताला

दरस बिन दूखण लागे नैन ।

जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहु न पायो चैन ॥

सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै मीठे लागैं बैन ।

बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी बह गई करवत ऐन ॥

कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन ।

मीराके प्रभु कब र मिलोगे दुख मेटण सुख दैन ॥

(२३) राग धानी-ताल तिताला

साँवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी ॥

थे छो म्हारा गुण रा सागर

औगण म्हारूँ मति जाज्यो जी ।

लोकन धीजे (म्हारो) मन न पतीजे

मुखड़ारा सबद सुणाज्यो जी ॥१॥

मैं तो दासी जनम जनमकी

म्हारे आँगण रमता आज्यो जी ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर
बेड़ो पार लगाज्यो जी ॥२॥

(२४) राग पीलू-ताल कहरवा

स्यामसुंदरपर वार ।
जीवड़ो मैं वार डारूँगी, हाँ ॥टेक॥
तेरे कारण जोग धारणा
लोकलाज कुळ डार ।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है
नैन चलत दोउँ बार ॥१॥
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी
कठिन बिरहकी धार ।
मीरा कहै प्रभु कब र मिलोगे
तुम चरणा आधार ॥२॥

(२५) राग पीलू-ताल कहरवा

रमइया बिन रह्योइ न जाय ।
खान पान मोहि फीको-सो लागे नैणा रहे मुरझाय ॥

बार बार मैं अरज करूँ छूँ रैण गई दिन जाय।
मीरा कहै हरि तुम मिलियाँ बिन तरस तरस तन जाय॥

(२६) राग दरबारी-ताल तिताला

प्रभुजी थे कहाँ गया नेहड़ो लगाय।
छोड़ गया बिस्वास सँगाती प्रेमकी बाती बळाय॥
बिरह समँदमें छोड़ गया छो नेहकी नाव चलाय।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे तुम बिन रह्योइ न जाय॥

(२७) राग सारंग-ताल दादरा

हे मेरो मनमोहना
आयो नहीं सखी री॥ टेक॥
कैं कहुँ काज किया संतनका
कैं कहुँ गैल भुलावना॥१॥
कहा करूँ कित जाऊँ मेरी सजनी
लाग्यो है बिरह सतावना॥२॥
मीरा दासी दरसण प्यासी
हरि-चरणाँ चित लावना॥३॥

(२८) राग बागेश्री-ताल चर्चरी

मैं बिरहणि बैठी जागूँ
जगत सब सोवै री आली ॥
बिरहणि बैठी रंगमहलमें,
मोतियनकी लड़ पोवै ।
इक बिरहणि हम ऐसी देखी,
अँसुवनकी माला पोवै ॥१॥
तारा गिण गिण रैण बिहानी,
सुखकी घड़ी कब आवै ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
जब मोहि दरस दिखावै ॥२॥

(२९) राग दरबारी कान्हरा-ताल तिताला

पिय बिन सूनो छै जी म्हारो देस ।
ऐसो है कोई पिवकूँ मिलावै
तन मन करूँ सब पेस ।

तेरे कारण बन बन डोलूँ
कर जोगणको भेस ॥१॥
अवधि बदीती अजहुँ न आए
पंडर हो गया केस ।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे
तज दियो नगर नरेस ॥२॥

(३०)राग कोसी कान्हरा-ताल तिताला (मध्य लय)

कोई कहियो रे प्रभु आवनकी ।
आवनकी मनभावनकी ॥टेक॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै
बाण पड़ी ललचावनकी ।
ए दोउ नैण कह्यो नहिं मानै
नदियाँ बहै जैसे सावनकी ॥१॥
कहा करूँ कछु नहिं बस मेरो
पाँख नहीं उड़ जावनकी ।
मीरा कहै प्रभु कब र मिलोगे
चेरी भइ हूँ तेरे दाँवनकी ॥२॥

(३१) राग सोहनी-ताल कहरवा

मैं जाण्यो नाहीं प्रभुको मिलण कैसे होय री।
आये मेरे सजना फिर गये अँगना
मैं अभागण रही सोय री ॥१॥
फाडूँगी चीर करूँ गळ कंथा
रहूँगी बैरागण होय री।
चुड़ियाँ फोडूँ माँग बखेरूँ
कजरा मैं डारूँ धोय री ॥२॥
निस बासर मोहि बिरह सतावै
कल न परत पळ मोय री।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी
मिल बिछड़ो मत कोय री ॥३॥

(३२) राग पूरिया कल्याण-ताल दीपचंदी

साजन सुध ज्यूँ जाणो ज्यूँ लीजै हो।
तुम बिन मोरे और न कोई
क्रिया रावरी कीजै हो ॥१॥

दिन नहिं भूख रैण नहिं निंदरा
यूँ तन पळ पळ छीजै हो ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
मिल बिछड़न मत कीजै हो ॥२॥

(३३) राग गौंड मलार–ताल चर्चरी

बादळ देख डरी हो, स्याम ! मैं बादळ देख डरी ।
काळी-पीळी घटा ऊमड़ी बरस्यौ एक घरी ।
जित जाऊँ तित पाणी पाणी हुई हुई भोम हरी ॥
जाका पिय परदेस बसत है भीजूँ बहार खरी ।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी कीजो प्रीत खरी ॥

(३४) राग सूरदासी मलार–ताल तिताला

(मध्य लय)

बरसै बदरिया सावनकी,
सावनकी मनभावनकी ।
सावनमें उमग्यो मेरो मनवा
भनक सुनी हरि आवनकी ।

उमड़ घुमड़ चहुँ दिसिसे आयो
दामण दमके झर लावनकी ॥१॥
नान्हीं नान्हीं बूँदन मेहा बरसै
सीतल पवन सोहावनकी ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
आनँद मंगळ गावनकी ॥२॥

(३५) राग रामदासी मलार-ताल तिताला

डारि गयो मनमोहन पासी ।
आँबाको डाळ कोयल इक बोलै
मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ॥१॥
बिरहकी मारी मैं बन-बन डोलूँ
प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी ।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ॥२॥

(३६) राग शुद्ध सारंग-ताल तिताला

हरि बिन ना सरै री माई ।
मेरा प्राण निकस्या जात हरी बिन ना सरै माई ॥

मीन दादुर बसत जळमें जळसे उपजाई ।
तनक जळसे बाहर कीना तुरत मर जाई ॥
कान लकरी बन परी काठ घुन खाई ।
ले अगन प्रभु डार आये भसम हो जाई ॥
बन-बन ढूँढत मैं फिरी माई सुधि नहिं पाई ।
एक बेर दरसण दीजे सब कसर मिटि जाई ॥
पात ज्यों पीळी पड़ी अरु बिपत तन छाई ।
दासि मीरा लाल गिरधर मिल्या सुख छाई ॥

(३७) राग कालिंगड़ा—ताल तिताला

सुनी हो में हरि आवनकी अवाज ।
महल चढ़-चढ़ जोऊँ मेरी
सजनी ! कब आवै महाराज ॥१॥
दादर मोर पपइया बोलै,
कोयल मधुरे साज ।
उमँग्यो इंद्र चहूँ दिसि बरसै,
दामणि छोडी लाज ॥२॥

धरती रूप नवा नवा धरिया,
इंद्र मिलणकै काज ।
मीराके प्रभु हरि अविनासी
वेग मिलो सिरराज ॥३॥

(३८) राग टोड़ी-ताल तिताला

आवो मनमोहनाजी जोऊँ थाँरी वाट ।
खान-पान मोहि नेक न भावै नैणन लगे कपाट ॥
तुम आयाँ बिन सुख नहिं मेरे दिलमें बहोत उचाट ।
मीरा कहै मैं भई रावरी छाँडो नाँहि निराट ॥

(३९) राग सुकल बिलावल-ताल तिताला

आवो मनमोहनजी मीठा थाँरा बोल ।
बाळपणाँकी प्रीत रमइयाजी,
कदे नहिं आयो थाँरो तोल ॥१॥
दरसण बिन मोहि जक न परत है,
चित मेरो डावाँडोल ।

मीरा कहै मैं भई रावरी,
कहो तो बजाऊँ ढोल ॥२॥

(४०) राग पंचम-ताल तिताला

सोवत ही पलकामें मैं तो
पलक लगी पलमें पिव आये ।
मैं जु उठी प्रभु आदर देणकूँ,
जाग पड़ी पिव ढूँढ न पाये ॥१॥
और सखी पिव सोइ गमाये,
मैं जू सखी पिव जागि गमाये ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
सब सुख होय स्याम घर आये ॥२॥

(४१) राग पीलू-ताल कहरवा

राम मिलणके काज सखी,
मेरे आरति उरमें जागी री ।
तड़फत-तड़फत कळ न परत है,
बिरहबाण उर लागी री ।

निसदिन पंथ निहारूँ पिवको,
पलक न पल भरी लागी री ॥१॥
पीव-पीव मैं रटूँ रात-दिन,
दूजी सुध-बुध भागी री।
बिरह भुजँग मेरो डस्यो है कलेजो
लहर हळाहळ जागी री ॥२॥
मेरी आरति मेटि गोसाईं,
आय मिलौ मोहि सागी री।
मीरा ब्याकुल अति उकळाणी,
पियाकी उमँग अति लागी री ॥३॥

(४२) राग भीमपलासी-ताल तिताला

गोबिंद कबहुँ मिलै पिया मेरा।
चरण-कँवलको हँस-हँस देखूँ राखूँ नैणाँ नेरा।
निरखणकूँ मोहि चाव घणेरो कब देखूँ मुख तेरा ॥
ब्याकुल प्राण धरत नहिं धीरज,मिल तूँ मीत सबेरा।
मीराके प्रभु गिरधर नागर ताप तपन बहुतेरा ॥

(४३) राग भैरवी-ताल कहरवा

मैं हरि बिन क्यों जिऊँ री माइ ।
पिव कारण बौरी भई ज्यूँ काठहि घुन खाइ ।
ओखद मूळ न संचरै मोहि लाग्यो बौराइ ॥
कमठ दादुर बसत जळमें जलहि ते उपजाइ ।
मीन जळके बीछुरै तन तळफि करि मरि जाइ ॥
पिव ढूँढण बन-बन गई कहुँ मुरली धुनि पाइ ।
मीराके प्रभु लाल गिरधर मिलि गये सुखदाइ ॥

(४४) धुन लावनी-ताल कहरवा

तुमरे कारण सब सुख छोड्या
अब मोहि क्यूँ तरसावौ हौ ।
बिरह-बिथा लागी उर अंतर
सो तुम आय बुझावौ हौ ॥१॥
अब छोड़त नहिं बणै प्रभूजी
हँसकर तुरत बुलावौ हौ ।
मीरा दासी जनम-जनमकी
अंगसे अंग लगावौ हौ ॥२॥

(४५) राग पीलू-ताल कहरवा

करुणा सुणो स्याम मेरी ।
मैं तो होय रही चेरी तेरी ॥
दरसण कारण भई बावरी बिरह-बिथा तन घेरी ।
तेरे कारण जोगण हूँगी दूँगी नग्र बिच फेरी ॥
कुंज-बन हेरी-हेरी ॥
अंग भभूत गळे मृगछाला यो तन भसम करूँ री ।
अजहुँ न मिल्या राम अविनासी बन-बन बीच फिरूँ री
रोऊँ नित टेरी-टेरी ॥
जन मीराकूँ गिरधर मिळिया दुख मेटण सुख भेरी ।
रूम-रूम साता भइ उरमें मिट गई फेरापेरी ॥
रहूँ चरननि तर चेरी ॥

(४६) राग सोरठ-ताल चर्चरी

हो जी हरि कित गये नेह लगाय ।
नेह लगाय मेरो मन हर लियो रस भरि टेर सुनाय ।
मेरे मनमें ऐसी आवै मरूँ जहर-बिस खाय ॥

छाँडि गये बिसवासघात करि नेहकी नाव चढ़ाय ।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे रहे मधुपुरी छाय ॥

(४७) राग दुर्गा-ताल तिताला

हो गये स्याम दूजके चंदा ॥
मधुबन जाय रहे मधुबनिया,
हमपर डारो प्रेमको फंदा ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
अब तो नेह परो कछु मंदा ॥

(४८) राग सावनी कल्याण-ताल तिताला

पपइया रे पिवकी बाणि न बोल ।
सुणि पावेली बिरहणी रे थारी राळेली पाँख मरोड़ ॥
चाँच कटाऊँ पपइया रे ऊपर काळो र लूण ।
पिव मेरा मैं पीवकी रे तू पिव कहै स कूण ॥

थारा सबद सुहावणा रे जो पिव मेळा आज ।
चाँच मँढाऊँ थारी सोवनी रे तू मेरे सिरताज ॥
प्रीतमकूँ पतियाँ लिखूँ रे कागा तूँ ले जाय ।
जाइ प्रीतम जासूँ यूँ कहै रे थाँरि बिरहण धान न खाय
मीरा दासी व्याकुळी रे पिव-पिव करत बिहाय ।
बेगि मिलो प्रभु अंतरजामी तुम बिन रह्यौ न जाय॥

(४९) राग देस-ताल तिताला

भवनपति तुम घर आज्यो हो ।
बिथा लगी तन माँहिने (म्हारी) तपत बुझाज्यो हो ॥
रोवत-रोवत डोलता सब रैण बिहावै हो ।
भूख गई निदरा गई पापी जीव न जावै हो ॥
दुखियाकूँ सुखिया करो मोहि दरसण दीजै हो ।
मीरा व्याकुल बिरहणी अब बिलम न कीजै हो ॥

(५०) राग देस-ताल तिताला

पिया मोहि दरसण दीजै हो ।
बेर-बेर मैं टेरहूँ या किरपा कीजै हो ॥
जेठ महीने जळ बिना पंछी दुख होई हो ।
मोर असाढाँ कुरळहे घन चात्रग सोई हो ॥
सावणमें झड़ लागियो सखि तीजाँ खेलै हो ।
भादरवै नदियाँ बहै दूरी जिन मेलै हो ॥
सीप स्वाति ही झेलती आसोजाँ सोई हो ।
देव कातीमें पूजहे मेरे तुम होई हो ॥
मंगसर ठंड बहोती पड़ै मोहि बेगि सम्हालो हो ।
पोस महीं पाला घणा, अबही तुम न्हालो हो ॥
महा महीं बसंत पंचमी फागाँ सब गावै हो ।
फागुण फागाँ खेलहैं बणराय जरावै हो ॥

चैत चित्तमें ऊपजी दरसण तुम दीजै हो ।
बैसाख बणराइ फूलवै कोमल कुरळीजै हो ॥
काग उडावत दिन गया बूझूँ पंडित जोसी हो ।
मीरा बिरहण ब्याकुली दरसण कद होसी हो ॥

(५१) राग बिहागरा-ताल तिताला

ऐसी लगन लगाय कहाँ (तूँ) जासी ।
तुम देखे बिन कल न पड़त है
तड़फ तड़फ जिव जासी ॥१॥
तेरे खातिर जोगण हूँगी
करवत लूँगी कासी ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
चरणकँवलकी दासी ॥२॥

(५२) राग आनन्द भैरों-ताल तिताला

सखी मेरी नींद नसानी हो ।
पियको पंथ निहारत सिगरी रैण बिहानी हो ॥

सखियन मिलकर सीख दई मन एक न मानी हो ।
बिन देख्याँ कल नाहिं पड़त जिय ऐसी ठानी हो ॥
अंग अंग ब्याकुल भई मुख पिय पिय बानी हो ।
अंतर बेदन बिरहकी कोई पीर न जानी हो ॥
ज्यूँ चातक घनकूँ रटै मछली जिमि पानी हो ।
मीरा ब्याकुल बिरहणी सुध बुध बिसरानी हो ॥

(५३) राग कोसी-ताल तिताला

म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो ।
पल पल ऊभी पंथ निहारूँ,
दरसण म्हाँने दीजो ॥ १ ॥
मैं तो हूँ बहु औगुणवाळी,
औगण सब हर लीजो ॥ २ ॥
मैं तो दासी थाँरे चरणकँवलकी,
मिल बिछड़न मत कीजो ॥ ३ ॥

मीराके प्रभु गिरधर नागर,

हरि चरणाँ चित दीजो ॥ ४ ॥

(५४) राग सावेरी-ताल तिताला

हरि बिन क्यूँ जीऊँ री माय।

हरि कारण बौरी भई,

जस काठहि घुन खाय ॥ १ ॥

औषध मूल न संचरै,

मोहिं लागो बौराय।

कमठ दादुर बसत जलमहँ,

जलहिं ते उपजाय ॥ २ ॥

हरी ढूँढ़न गई बन बन,

कहुँ मुरली धुन पाय।

मीराके प्रभु लाल गिरधर,

मिलि गये सुखदाय ॥ ३ ॥

(५५) राग काफ़ी-ताल दीपचंदी

घर आँगण न सुहावे,
पिया बिन मोहि न भावे ॥टेक॥
दीपक जोय कहा करूँ सजनी !
पिय परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे,
सिसक सिसक जिय जावे ॥
नैण निंदरा नहि आवे ॥ १ ॥
कदकी ऊभी मैं मग जोऊँ,
निस दिन बिरह सतावे ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे,
हिवड़ो अति उकळावे ॥
हरी कब दरस दिखावे ॥ २ ॥
ऐसो है कोई परम सनेही,
तुरत सनेसो लावे ।

वा बिरियाँ कद होसी मुझको,
हरि हँस कंठ लगावे ॥
मीरा मिलि होरी गावे ॥ ३ ॥

(५६) राग देवगिरी-ताल तिताला

पिया, तैं कहाँ गयौ नेहरा लगाय ॥
छाँडि गयौ अब कहाँ बिसासी,
प्रेमकी बाती बराय ॥ १ ॥
बिरह-समँदमें छाँडि गयौ, पिव,
नेहकी नाव चलाय ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
तुम बिन रह्योय न जाय ॥ २ ॥

(५७) राग बरसाती-ताल चर्चरी

बंसीवारा आज्यो म्हारे देस,
थारी साँवरी सुरत व्हालो बेस ।
आऊँ-आऊँ कर गया साँवरा,
कर गया कौल अनेक ।

गिणता-गिणता घस गई म्हारी
आँगळियाँ री रेख ॥ १ ॥
मैं बैरागिण आदिकी जी
थाँरे म्हारे कदको सनेस ।
बिन पाणी बिन साबुण साँवरा
होय गई धोय सपेद ॥ २ ॥
जोगण होय जंगळ सब हेरूँ
तेरा नाम न पाया भेस ।
तेरी सुरतके कारणे
म्हे धर लिया भगवाँ भेस ॥ ३ ॥
मोर-मुगट पीतांबर सोहै
घूँघरवाळा केस ।
मीराके प्रभु गिरधर मिलियाँ
दूनो बढ़ै सनेस ॥ ४ ॥

(५८) राग जोगिया-ताल कहरवा

बाला मैं बैरागण हूँगी ।
जिन भेषाँ म्हारो साहिब रीझे,
सोही भेष धरूँगी ॥ १ ॥

सील संतोष धरूँ घट भीतर,
समता पकड़ रहूँगी।
जाको नाम निरंजन कहिये,
ताको ध्यान धरूँगी ॥ २ ॥
गुरुके ग्यान रँगूँ तन कपड़ा,
मन मुद्रा पैरूँगी।
प्रेम-पीतसू हरि-गुण गाऊँ,
चरणन लिपट रहूँगी ॥ ३ ॥
या तनकी मैं करूँ कींगरी,
रसना नाम कहूँगी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
साधाँ संग रहूँगी ॥ ४ ॥

(५९) राग माखा-ताल कहरवा

इण सरवरियाँ री पाळ मीराबाई साँपड़े।
साँपड़ किया असनान सूरज सामी जप करे।
होय बिरंगी नार, डगराँ बिच क्यूँ खड़ी ॥१॥

काँई थारो पीहर दूर घराँ सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे असल गुँवार तनै मेरी के पड़ी ॥२॥
गुरु म्हारा दीनदयाल हीराँरा पारखी ।
दियो म्हाने ग्यान बताय, संगत कर साधरी ॥३॥
खोई कुळकी लाज मुकुंद थाँरे कारणे ।
बेगही लीज्यो सम्हाल, मीरा पड़ी बारणे ॥४॥

(६०) राग छाया टोड़ी-ताल तिताला

म्हारे घर आओ प्रीतम प्यारा ।
तन मन धन सब भेट धरूँगी,
भजन करूँगी तुम्हारा ।
तुम गुणवंत सुसाहिब कहिये,
मोमें औगुण सारा ॥१॥
मैं निगुणी कछु गुण नहिं जानूँ
तुम छो बगसणहारा ।
मीरा कहै प्रभु कब रे मिलोगे
तुम बिन नैण दुखारा ॥२॥

(६१) राग पीलू–ताल कहरवा

साजन घर आओनी मीठा बोला ॥टेक॥

कदकी ऊभी मैं पंथ निहारूँ,
थाँरो, आयाँ होसी भला ॥१॥

आओ निसंक, संक मत मानो,
आयाँ ही सुक्ख रहेला ॥२॥

तन मन वार करूँ न्यौछावर,
दीज्यो स्याम मोय हेला ॥३॥

आतुर बहुत बिलम मत कीज्यो,
आयाँ ही रंग रहेला ॥४॥

तुमरे कारण सब रंग त्याग्या,
काजळ तिलक तमोला ॥५॥

तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है,
कर धर रही कपोला ॥६॥

मीरा दासी जनम जनमकी,
दिलकी घुंडी खोला ॥७॥

(६२) राग प्रभावंती-ताल तिताला

म्हारे जनम-मरणरा साथी थाँने नहिं बिसरूँ दिनराती
थाँ देख्याँ बिन कल न पड़त है जाणत मेरी छाती।
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारूँ रोय-रोय अँखियाँ राती॥
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती।
दोउ कर जोड्याँ अरज करूँ छूँ सुण लीज्यो मेरी बाती
यो मन मेरो बड़ो हरामी ज्यूँ मदमातो हाथी।
सतगुर हाथ धरयो सिर ऊपर आँकुस दै समझाती॥
पल-पल पिवको रूप निहारूँ निरख-निरख सुख पाती
मीराके प्रभु गिरधर नागर हरिचरणाँ चित राती॥

दर्शनानन्द

(६३) राग मालकोस-ताल तिताला

मैं अपणे सैयाँ सँग साँची।
अब काहेकी लाज सजनी परगट ह्वै नाची॥
दिवस भूख न चैन कबहूँ नींद निसि नासी।
बेध वार पार ह्वैगो ग्यान गुह गाँसी॥

कुळ कुटंबी आन बैठे मनहु मधुमासी ।
दासी मीरा लाल गिरधर मिटी सब हाँसी ॥

(६४) राग पटमञ्जरी–ताल तिताला

मैं तो साँवरेके रंग राची ।
साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू,
लोक-लाज तजि नाची ॥१॥
गई कुमति लई साधुकी संगति,
भगत रूप भई साँची ।
गाय गाय हरिके गुण निस दिन,
काल-ब्यालसूँ बाँची ॥२॥
उण बिन सब जग खारो लागत,
और बात सब काँची ।
मीरा श्रीगिरधरन लालसूँ,
भगति रसीली जाँची ॥३॥

(६५) राग ललित–ताल तिताला

हमरो प्रणाम बाँकेबिहारीको ।
मोरमुगट माथे तिलक बिराजै,
कुंडळ अलका कारीको ॥१॥

अधर मधुरपर बंसी बजावै,
रीझ रिझावै राधाप्यारीको ।
यह छवि देख मगन भई मीरा,
मोहन गिरवरधारीको ॥२॥

(६६) राग त्रिवेनी-ताल तिताला (द्रुत लय)

(मेरे) नैनाँ निपट बंकट छवि अटके ।
देखत रूप मदनमोहनको पियत पियूख न मटके ।
बारिज भवाँ अलक टेढी मनौ अति सुगंधरस अटके ॥
टेढी कटि टेढी कर मुरली टेढी पाग लर लटके ।
मीराँ प्रभुके रूप लुभानी गिरधर नागर-नटके ॥

(६७) राग मुलतानी-ताल तिताला

ऐसा प्रभु जाण न दीजै हो ।
तन मन धन करि वारणै हिरदै धर लीजै हो ॥
आव सखी मुख देखिये नैणाँ रस पीजै हो ।
जिण जिण विध रीझै हरी सोई विधि कीजै हो ॥

सुंदर स्याम सुहावणा मुख देख्याँ जीजै हो ।
मीराके प्रभु रामजी बडभागण रीझै हो ॥

(६८) राग गूजरी-ताल झप

या मोहनके मैं रूप लुभानी ।
सुंदर बदन कमलदल लोचन
बाँकी चितवन मँद मुसकानी ॥१॥
जमनाके नीरे तीरे धेन चरावै,
बंसीमें गावै मीठी बानी ।
तन मन धन गिरधरपर वारूँ,
चरणकँवल मीरा लपटानी ॥२॥

(६९) राग पीलू-ताल कहरवा

पग घुँघरु बाँध मीरा नाची रे ।
मैं तो मेरे नारायणकी आपहि हो गइ दासी रे ।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुळनासी रे ॥
बिषका प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर सहज मिलेअबिनासी रे ॥

(७०) राग मॉड़-ताल तिताला

माई री मैं तो लियो गोविंदो मोळ ।

कोई कहै छाने कोई कहै छुपके,

लियो री बजंता ढोल ॥१॥

कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुहँघो,

लियो री तराजू तोल ।

कोई कहै काळो कोई कहै गोरो,

लियो री अमोलक मोल ॥२॥

कोई कहै घरमें कोई कहै बनमें,

राधाके संग किलोल ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर,

आवत प्रेमके मोल ॥३॥

(७१) राग तिलंग-ताल तेवरा

मन रे परसि हरिके चरण ।

सुभग सीतल कँवल कोमल,

त्रिविध ज्वाला हरण ।

जिण चरण प्रह्लाद परसे,
इंद्र पदवी धरण ॥१॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें,
राख अपनो सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो,
नखसिखाँ सिरी धरण ॥२॥
जिण चरण प्रभु परसि लीने,
तरी गोतम-घरण ।
जिण चरण काळीनाग नाथ्यो,
गोप-लीला-करण ॥३॥
जिण चरण गोबरधन धारयो,
गर्व मघवा हरण ।
दासि मीरा लाल गिरधर,
अगम तारण तरण ॥४॥

(७२) राग पीलू बरवा-ताल कहरवा

बडे घर ताळी लागी रे,
म्हाँरा मनरी उणारथ भागी रे ।

छीलरिये म्हाँरो चित नहीं रे,
डाबरिये कुण जाव ।
गंगा-जमनासूँ काम नहीं रे,
मैं तो जाय मिलूँ दरियाव ॥१॥
हाळयाँ मोळयाँसूँ काम नहीं रे,
सीख नहि सिरदार ।
कामदाराँसूँ काम नहीं रे,
मैं तो जाब करूँ दरबार ॥२॥
काच कथीरसूँ काम नहीं रे,
लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपासूँ काम नहीं रे,
म्हाँरे हीराँरो बौपार ॥३॥
भाग हमारो जागियो रे,
भयो समँद सूँ सीर ।
अम्रित प्याला छाँडिके,
कुण पीवे कड़वो नीर ॥४॥

पीपाकूँ प्रभु परचो दियो रे,

दीन्हा खजाना पूर ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर,

धणी मिल्या छै हजूर ॥५॥

(७३) राग मधुमाध सारंग-ताल तिताला

नंदनँदन बिलमाई, बदराने घेरी माई ।

इत घन लरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ।

उमड़ घुमड़ चहूँ दिससे आया, पवन चलै पुरवाई ॥

दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणाई ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर, चरणकँवल चित लाई ॥

(७४) राग नीलाम्बरी-ताल कहरवा

नैणा लोभी, रे, बहुरि सके नहिं आय ।

रोम-रोम नखसिख सब निरखत

ललकि रहे ललचाय ॥१॥

मैं ठाढ़ी ग्रिह आपणे री,

मोहन निकसे आय ।

बदन चंद परकासत हेली,
मंद-मंद मुसकाय ॥२॥
लोक कुटुंबी बरजि बरजहीं,
बतियाँ कहत बनाय ।
चंचळ निपट अटक नहिं मानत,
पर-हथ गये बिकाय ॥३॥
भलो कहौ कोई बुरी कहौ मैं,
सब लई सीस चढाय ।
मीरा प्रभु गिरधरनलाल बिन
पल छिन रह्यो न जाय ॥४॥

(७५) होली झँझोटी-ताल चर्चरी

होरी खेलत हैं गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो सँग जुवती ब्रजनारी ॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ देत सबनपै डारी ॥

छैल छबीले नवल कान्ह सँग स्यामा प्राणपियारी ।
गावत चार धमार राग तहँ दै दै कल करतारी ॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो बाढ्यौ रस ब्रज भारी ।
मीराकूँ प्रभु गिरधर मिलिया मोहनलाल बिहारी ॥

(७६) राग झँझोटी-ताल दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ॥
जाके सिर मोर मुगट मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥
छाँडि दई कुळकी कानि कहा करिहै कोई ।
संतन ढिग बैठि बैठि लोकलाज खोई ॥
चुनरीके किये टूक ओढ़ लीन्हीं लोई ।
मोती मूँगे उतार बनमाळा पोई ॥
अँसुवन जळ सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई ॥
दूधकी मथनियाँ बड़े प्रेमसे बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥

भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही॥

(७७) राग अलैया-ताल कहरवा

तोसों लाग्यौ नेह रे प्यारे नागर नंद-कुमार।
मुरली तेरी मन हरयौ,
बिसरयौ घर-ब्यौहार ॥तोसों०॥
जबतें श्रवननि धुनि परी,
घर अँगणा न सुहाय।
पारधि ज्यूँ चूकै नहीं,
म्रिगी बेधि दइ आय॥ १॥
पानी पीर न जानई ज्यों,
मीन तड़फ मरि जाय।
रसिक मधुपके मरमको नहीं,
समुझत कमल सुभाय॥ २॥
दीपकको जो दया नहिं,
उडि-उडि मरत पतंग।

मीरा प्रभु गिरधर मिले,
जैसे पाणी मिलि गयौ रंग ॥ ३ ॥

(७८) राग सोरठ-ताल कहरवा

जोसीड़ाने लाख बधाई रे अब घर आये स्याम ॥
आज आनँद उमँगि भयो है जीव लहै सुखधाम ।
पाँच सखी मिलि पीव परसिकैं आनँद ठामूँ-ठाम ॥
बिसरि गई दुख निरखि पियाकूँ सुफळ मनोरथ काम
मीराके सुखसागर स्वामी भवन गवन कियो राम ॥

(७९.) राग परज-ताल कहरवा

सहेलियाँ साजन घर आया हो ।
बहोत दिनाँकी जोवती बिरहणि पिव पाया हो ॥
रतन करूँ नेवछावरी ले आरति साजूँ हो ।
पिवका दिया सनेसड़ा ताहि बहोत निवाजूँ हो ॥
पाँच सखी इकठी भई मिलि मंगल गावै हो ।
पियाका रळी बधावणा आणँद अंग न मावै हो ॥

हरि सागरसूँ नेहरो नैणाँ बँध्या सनेह हो ।
मीरा सखीके आँगणै दूधाँ बूठा मेह हो ॥

(८०) राग कजरी-ताल कहरवा

म्हारा ओळगिया घर आया जी ।
तनकी ताप मिटी सुख पाया,
हिल-मिल मंगल गाया जी ॥ १ ॥
घनकी धुनि सुनि मोर मगन भया,
यूँ मेरे आणँद छाया जी ।
मगन भई मिल प्रभु अपणा सूँ,
भौका दरद मिटाया जी ॥ २ ॥
चंदकूँ निरखि कमोदणि फूलै,
हरखि भया मेरी काया जी ।
रगरग सीतल भई मेरी सजनी,
हरि मेरे महल सिधाया जी ॥ ३ ॥
सब भगतनका कारज कीन्हा,
सोई प्रभु मैं पाया जी ।

मीरा बिरहणि सीतल होई,
दुख दुंद दूर नसाया जी ॥४॥

(८१) राग बिलावल-ताल कहरवा

पियाजी म्हाँरे नैणाँ आगे रहज्यो जी ।
नैणाँ आगे रहज्यो म्हाँने,
भूल मत जाज्यो जी ।
भौ-सागरमें बही जात हूँ,
बेग म्हारी सुध लीज्यो जी ॥१॥
राणाजी भेज्या बिखका प्याला,
सो इमरित कर दीज्यो जी ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
मिल बिछुड़न मत कीज्यो जी ॥२॥

प्रेमालाप

(८२) राग सिंध भैरवी-ताल कहरवा

म्हाँरे घर होता जाज्यो राज ।
अबके जिन टाळा दे जाओ
सिरपर राखूँ बिराज ॥१॥

म्हे तो जनम जनमकी दासी
थे म्हाँका सिरताज ।
पावणड़ा म्हाँके भलाँ ही पधारया
सब ही सुधारण काज ॥२॥
म्हे तो बुरी छाँ थाँके भली छे
घणेरी, तुम हो एक रसराज ।
थाँने हम सब ही की चिंता
(तुम) सबके हो गरीबनिवाज ॥३॥
सबके मुगट-सिरोमणि सिरपर
मानों पुन्यकी पाज ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
बाँह गहेकी लाज ॥४॥

(८३) राग देस-ताल कहरवा

चालाँ वाही देस प्रीतम पावाँ चालाँ वाही देस ।
कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ कहो तो भगवाँ भेस ॥

कहो तो मोतियन माँग भरावाँ कहो छिटकावाँ केस।
मीराके प्रभु गिरधर नागर सुणग्यो बिड़द नरेस ॥

(८४) राग हमीर-ताल कहरवा

आवो सहेल्याँ रळी कराँ हे
पर घर गवण निवारि ।
झूठा माणिक मोतिया री
झूठी जगमग जोति ।
झूठा सब आभूखण री
साँची पियाजीरी पोति ॥१॥
झूठा पाट-पटंबरा रे
झूठा दिखणी चीर ।
साँची पियाजी री गूदड़ी
जामें निरमल रहै सरीर ॥२॥
छप्पन भोग बुहाय देहे
इण भोगनमें दाग ।
लूण अलूणो ही भलो हे

अपणे पियाजीरो साग ॥३॥
देखि बिराणे निवाँणकूँ हे
क्यूँ उपजावै खीज ।
कालर अपणो ही भलो हे
जामें निपजै चीज ॥४॥
छैल बिराणो लाखको हे
अपणे काज न होय ।
ताके सँग सीधारताँ हे
भला न कहसी कोय ॥५॥
वर हीणो अपणो भलो हे
कोढ़ी कुष्टी कोय ।
जाके सँग सीधारताँ हे
भला कहै सब लोय ॥६॥
अबिनासीसूँ बालबा हे
जिनसूँ साँची प्रीत ।

मीराँकूँ प्रभुजी मिल्या हे
ए ही भगतिकी रीत ॥७॥

(८५) राग नट बिलावल–ताल तिताला

रे साँवलिया म्हाँरै आज
रँगीली गणगोर छै जी ।
काळी पीळी बदळीमें बिजळी चमके,
मेघ घटा घनघोर छै जी ॥१॥
दादुर मोर पपीहा बोले,
कोयल कर रही सोर छै जी ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
चरणाँमें म्हाँरो जोर छै जी ॥२॥

(८६) राग कान्हरा–ताल तिताला

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर ।
हम चितवत तुम चितवत नाहीं दिलके बडे कठोर ॥
मेरे आसा चितवनि तुमरी और न दूजी दोर ।
तुमसे हमकूँ एक हो जी हम-सी लाख करोर ॥

ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूँ अरज करत भयो भोर ।
मीराके प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अकोर ॥

(८७) राग प्रभाती-ताल कहरवा

जागो म्हाँरा जगपतिरायक हँस बोलो क्यूँ नहीं ।
हरि छो जी हिरदा माहिं पट खोलो क्यूँ नहीं ॥
तन मन सुरति सँजोइ सीस चरणाँ धरूँ ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम तहाँ सेवा करूँ ॥
सदकै करूँ जी सरीर जुगे जुग वारणैं ।
छोडी छोडी कुळकी लाज स्याम थाँरे कारणैं ॥
थोड़ी थोड़ी लिखूँ सिलाम बहोत करि जाणज्यौ ।
बंदी हूँ खानाजाद महरि करि मानज्यौ ॥
हाँ हो म्हारा नाथ सुनाथ बिलम नहिं कीजियै ।
मीरा चरणाँकी दासि दरस फिर दीजियै ॥

(८८) राग हमीर-ताल तिताला

हरी मेरे जीवन प्रान-अधार ।
और आसरो नाँही तुम बिन तीनूँ लोक मँझार ॥

आप बिना मोहि कछु न सुहावै निरख्यौ सब संसार।
मीरा कहै मैं दास रावरी दीज्यौ मती बिसार ॥

(८९) राग छाया टोडी-ताल तिताला

सखी म्हारो कानूड़ो कळेजेकी कोर ।
मोर मुगट पीतांबर सोहै कुंडळकी झकझोर ॥
बिंद्राबनकी कुंजगळिनमें नाचत नंदकिसोर ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरण-कँवळ चितचोर ॥

(९०) राग हमीर-ताल तिताला

बसो मोरे नैननमें नँदलाल ।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैणा बने बिसाल ।
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती-माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नूपुर सबद रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगतबछल गोपाल ॥

(९१) राग प्रभाती-ताल तिताला

जागो बंसीवारे ललना
जागो मोरे प्यारे ।

रजनी बीती भोर भयो है
घर घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है
कँगनाके झनकारे॥
उठो लालजी भोर भयो है
सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल
जय जय सबद उचारे॥
माखन रोटी हाथमें लीनी
गउवनके रखवारे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
तरण आयाँकूँ तारे॥

(९२) राग मोँड़-ताल तिताला

स्याम! मने चाकर राखोजी,
गिरधारीलाल! चाकर राखोजी।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसण पासूँ।
बिंद्राबनकी कुंजगलिनमें, तेरी लीला गासूँ॥

चाकरीमें दरसण पाऊँ, सुमिरण पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाताँ सरसी ॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै, गल बैजंती माळा ।
बिंद्राबनमें धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाळा ॥
हरे हरे नित बाग लगाऊँ, बिच बिच राखूँ क्यारी ।
साँवरियाके दरसण पाऊँ, पहर कुसुम्मी सारी ॥
जोगी आया जोग करणकूँ, तप करणे संन्यासी ।
हरी भजनकूँ साधू आया, बिंद्राबनके बासी ॥
मीराके प्रभु गहिर गँभीरा सदा रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें, प्रेमनदीके तीरा ॥

(९३) राग हंस नारायण—ताल तिताला

आली ! साँवरेकी दृष्टि मानो,
प्रेमकी कटारी है ॥टेक॥
लागत बेहाल भई,
तनकी सुध बुद्ध गई ।
तन मन सब ब्यापो प्रेम,
मानो मतवारी है ॥१॥

सखियाँ मिल दोय चारी,
बावरी-सी भई न्यारी ।
हौं तो वाको नीके जानौं,
कुंजको बिहारी है ॥२॥
चंदको चकोर चाहै,
दीपक पतंग दाहै ।
जळ बिना मीन जैसे,
तैसे प्रीत प्यारी है ॥३॥
बिनती करूँ हे स्याम,
लागूँ मैं तुम्हारे पाँव ।
मीरा प्रभु ऐसी जानो,
दासी तुम्हारी है ॥४॥

(९४) राग मालकोस–ताल तिताला (मध्यलय)

ऐसे पियै जान न दीजै, हो ॥
चलो, री सखी ! मिलि राखिये,
नैनन रस पीजै, हो ।
स्याम सलोनो साँवरो
मुख देखत जीजै, हो ॥

जोइ जोइ भेषसों हरि मिलैं,
सोइ सोइ कीजै, हो ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
बड़भागन रीजै, हो ॥

मिलनोत्तर प्रार्थना

(९५) राग तिलक कामोद-ताल तिताला

छोड़ मत जाज्यो जी महाराज ॥टेक॥
मैं अबळा बळ नाँय गुसाईं,
तुमही मेरे सिरताज ।
मैं गुणहीन गुण नाँय गुसाईं,
तुम समरथ महाराज ॥ १ ॥
थाँरी होयके किणरे जाऊँ,
तुमही हिवड़ारो साज ।
मीराके प्रभु और न कोई
राखो अबके लाज ॥ २ ॥

निश्चय

(९६) राग खम्माच-ताल तिताला

नहिं भावै थाँरो देसड़लोजी रँगरूड़ो ॥

थाँरा देसामें राणा साध नहीं
छै, लोग बसै सब कूड़ो ।
गहणा गाँठी राणा हम सब
त्याग्या त्याग्यो कररो चूड़ो ॥
काजल टीकी हम सब त्याग्या
त्याग्यो है बाँधन जूड़ो ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
बर पायो छै रूड़ो ॥

(९७) राग पहाड़ी-ताल कहरवा

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हाँरो काँई कर लेसी ,
म्हे तो गुण गोविंदका गास्याँ हो माई ॥१॥
राणोजी रूठ्यो वाँरो देस रखासी ,
हरि रूठ्याँ किठे जास्याँ हो माई ॥२॥
लोक लाजकी काण न मानाँ ,
निरभै निसाण घुरास्याँ हो माई ॥३॥

राम नामकी झाझ चलास्याँ,
भौ सागर तर जास्याँ हो माई ॥४॥
मीरा सरण साँवळ गिरधरकी,
चरण-कँवल लपटास्याँ हो माई ॥५॥

(९८) राग गुनकली—ताल तिताला

मैं गिरधरके घर जाऊँ।
गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम
देखत रूप लुभाऊँ ॥
रैण पड़ै तबही उठि जाऊँ
भोर भये उठि आऊँ।
रैण दिना वाके सँग खेलूँ
ज्यूँ त्यूँ ताहि रिझाऊँ ॥१॥
जो पहिरावै सोई पहिरूँ
जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी
उण बिन पल न रहाऊँ ॥२॥
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ
बेचै तो बिक जाऊँ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर
बार बार बलि जाऊँ ॥३॥

(९९) राग पीलू-ताल कहरवा

तेरो कोई नहिं रोकणहार मगन होइ मीरा चली ॥
लाज सरम कुळकी मरजादा सिरसैं दूर करी ।
मान-अपमान दोऊ धर पटके निकसी ग्यान-गळी ॥
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया निरगुण-सेज बिछी ।
पँचरंगी झालर सुभ सोहै फूलन फूल कळी ॥
बाजूबंद कडूला सोहै सिंदुर माँग भरी ।
सुमिरण थाळ हाथमें लीन्हो सोभा अधक खरी ॥
सेज सुखमणा मीरा सोहै सुभ है आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपणे मेरी थाँरी नाँहि सरी ॥

(१००) राग मालकोस-ताल तिताला

श्रीगिरधर आगे नाचूँगी ।
नाच नाच पिव रसिक रिझाऊँ
प्रेमी जनकूँ जाचूँगी ।
प्रेम प्रीतिका बाँधि घूँघरू
सुरतकी कछनी काछूँगी ॥

लोक-लाज कुळकी मरजादा
यामें एक न राखूँगी ।
पिवके पलँगा जा पोढूँगी
मीरा हरि-रँग राचूँगी ॥

(१०१) राग पूरिया कल्यान-ताल तिताला

राणाजी म्हे तो गोबिंदका गुण गास्याँ ।
चरणाम्रितको नेम हमारे,
नित उठ दरसण जास्याँ ॥
हरिमंदिरमें निरत करास्याँ
घूँघरिया घमकास्याँ ।
राम-नामका झाझ चलास्याँ,
भवसागर तर जास्याँ ॥
यह संसार बाड़का काँटा
ज्या संगत नहिं जास्याँ ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर
निरख परख गुण गास्याँ ॥

(१०२) राग अगना–ताल तिताला

राणाजी थे क्याँने राखो म्हाँसूँ बैर ।

थे तो राणाजी म्हाने इसड़ा लागो

ज्यूँ बृच्छनमें कैर ।

महल अटारी हम सब ताग्या

ताग्यो थाँरो बसनो सहर ॥

काजळ टीकी राणा हम सब

ताग्या, भगवीं चादर पहर ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर

इमरित कर दियो जहर ॥

(१०३) राग जौनपुरी–ताल तिताला

मैं गोबिंद गुण गाणा ।

राजा रूठै नगरी राखै

हरि रूठ्याँ कहँ जाणा ।

राणा भेज्या जहर पियाला

इमिरत करि पी जाणा ॥

डबियामें भेज्या ज भुजंगम

सालिगराम कर जाणा ।

मीरा तो अब प्रेम-दिवानी
साँवलिया बर पाणा ॥

(१०४) राग कामोद-ताल तिताला

बरजी मैं काहूकी नाँहि रहूँ ।
सुणो री सखी तुम चेतन होयकै
मनकी बात कहूँ ॥
साध-सँगति कर हरि-सुख लेऊँ
जगसूँ दूर रहूँ ।
तन धन मेरो सबही जावो
भल मेरो सीस लहूँ ॥
मन मेरो लागो सुमरण सेती
सबका मैं बोल सहूँ ।
मीराके प्रभु हरि अबिनासी
सतगुर सरण गहूँ ॥

(१०५) राग पीलू-ताल कहरवा

राणाजी म्हाँरी प्रीति पुरबली मैं काँई करूँ ।
राम नाम बिन नहीं आवड़े,
हिवड़ो झोला खाय ।

भोजनिया नहिं भावै म्हाँने,
नींदड़ली नहिं आय ॥१॥
बिषको प्यालो भेजियो जी,
जाओ मीरा पास ।
कर चरणाम्रित पी गई,
म्हाँरे गोबिंद रे बिसवास ॥२॥
बिषको प्यालो पी गई जी,
भजन करो राठौर ।
थाँरी मारी ना मरूँ,
म्हाँरो राखणवालो और ॥३॥
छापा तिलक लगाइया जी,
मनमें निश्चै धार ।
रामजी काज सँवारिया जी,
म्हाँने भावैं गरदन मार ॥४॥
पेटयाँ बासक भेजियो जी,
यो छै मोतीडाँरो हार ।

नाग गलेमें पहिरियो,

म्हाँरे महलाँ भयो उजियार ॥५॥

राठौड़ाँरी धीयड़ी जी,

सीसोद्याँरे साथ ।

ले जाती बैकुंठकूँ,

म्हाँरी नेक न मानी बात ॥६॥

मीरा दासी स्यामकी जी,

स्याम गरीबनिवाज ।

जन मीराकी राखज्यो कोइ,

बाँह गहेकी लाज ॥७॥

(१०६) राग खंभावती-ताल तिताला

राम नाम मेरे मन बसियो,

रसियो राम रिझाऊँ ए माय ।

मैं मँद-भागण करम-अभागण,

कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥१॥

बिरह-पिंजरकी बाड़ सखी री,
उठकर जी हुलसाऊँ ए माय ।
मनकूँ मार सजूँ सतगुरसूँ,
दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ॥२॥
डंको नाम सुरतकी डोरी,
कड़ियाँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।
प्रेमको ढोल बण्यो अति भारी,
मगन होय गुण गाऊँ ए माय ॥३॥
तन करूँ ताल मन करूँ ढफली,
सोती सुरति जगाऊँ ए माय ।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे,
तो प्रीतम-पद पाऊँ ए माय ॥४॥
मो अबळापर किरपा कीज्यो,
गुण गोविंदका गाऊँ ए माय ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
रज चरणनकी पाऊँ ए माय ॥५॥

प्रेम

(१०७) राग मधुमाध सारंग–ताल तिताला

या ब्रजमें कछु देख्यो री टोना ॥
ले मटकी सिर चली गुजरिया
आगे मिले बाबा नंदजीके छोना ।
दधिको नाम बिसरि गयो प्यारी
'ले लेहु री कोउ स्याम सलोना' ॥१॥
बिंद्राबनकी कुंजगलिनमें
आँख लगाय गयो मनमोहना ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
सुंदर स्याम सुघर रस लोना ॥२॥

(१०८) राग बृंदाबनी सारंग–ताल तिताला

आली ! म्हाँने लागे बृंदाबन नीको ।
घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोबिंदजीको ॥
निरमल नीर बहत जमनामें भोजन दूध-दहीको ।
रतन सिंघासण आप बिराजै मुगट धरयो तुळसीको ॥

कुंजन-कुंजन फिरत राधिका सबद सुणत मुरलीको।
मीराके प्रभु गिरधर नागर भजन बिना नर फीको ॥

(१०९) राग सूहा-ताल तिताला

चालो मन गंगा-जमना-तीर ।
गंगा-जमना निरमळ पाणी सीतल होत सरीर ।
बंसी बजावत गावत कान्हो संग लियाँ बळ बीर ॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै कुण्डळ झळकत हीर ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकँवलपर सीर ॥

(११०) राग धानी-ताल तिताला

मैं गिरधर रँग राती, सैयाँ मैं० ॥
पचरँग चोला पहर सखी री
मैं झिरमिट रमवा जाती ।
झिरमिटमाँ मोहि मोहन मिलियो
खोल मिली तन गाती ॥१॥
कोईके पिया परदेस बसत है
लिख-लिख भेजैं पाती ।

मेरा पिया मेरे हीय बसत है

ना कहुँ आती जाती ॥२॥

चंदा जायगा सूरज जायगा

जायगी धरण अकासी ।

पवन पाणी दोनूँ ही जायँगे

अटल रहै अविनासी ॥३॥

और सखी मद पी-पी माती

मैं बिन पीयाँ ही माती ।

प्रेमभठीको मैं मद पीयो

छकी फिरूँ दिन-राती ॥४॥

सुरत निरतको दिवलो जोयो

मनसाकी कर ली बाती ।

अगम घाणिको तेल सिंचायो

बाळ रही दिन-राती ॥५॥

जाऊँनी पीहरिये जाऊँनी सासरिये

हरिसूँ सैन लगाती ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर
हरिचरणाँ चित लाती ॥६॥

(१११) होरी सिन्दूरा-ताल धमार

फागुनके दिन चार होरी खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे ।
बिनि सुर राग छतीसूँ गावै रोम-रोम रणकार रे ॥
सील सँतोखकी केसर घोळी प्रेम प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे ॥
घटके सब पट खोल दिये हैं लोकलाज सब डार रे ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकँवळ बलिहार रे ॥

(११२) राग पटमंजरी-ताल कहरवा

मीरा रंग लागो राम हरी, औरन रँग अटक परी ।
चूड़ो म्हाँरे तिलक अरु माळा,
सीळ बरत सिंणगारो ।
और सिंगार म्हाँरे दाय न आवे,
यो गुरु ग्यान हमारो ॥१॥

कोइ निंदो कोइ बिंदो म्हे तो,
गुण गोबिंदका गास्याँ ।
जिण मारग म्हाँरा साध पधारे,
उण मारग म्हे जास्याँ ॥२॥
चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ,
काँई करसी म्हारो कोई ।
गजसे उतर कर खर नहिं चढस्याँ,
या तो बात न होई ॥३॥

(११३) राग जौनपुरी-ताल तिताला

सखी री लाज बैरण भई ।
श्रीलाल गोपालके सँग काहे नाहिं गई ॥१॥
कठिन क्रूर अक्रूर आयो साज रथ कहँ नई ।
रथ चढ़ाय गोपाल ले गयो हाथ मींजत रही ॥२॥
कठिन छाती स्याम बिछड़त बिरहतें तन तई ।
दासि मीरा लाल गिरधर बिखर क्यूँ ना गई ॥३॥

(११४) राग गूजरी-ताल कहरवा

कुण बाँचै पाती, बिना प्रभु कुण बाँचै पाती ।

कागद ले ऊधोजी आयो,
कहाँ रह्या साथी ।
आवत जावत पाँव घिस्या रे
(बाला) अँखियाँ भई राती ॥१॥
कागद ले राधा बाँचण बैठी,
(बाला) भर आई छाती ।
नैण नीरजमें अंब बहे रे
(बाला), गंगा बहि जाती ॥२॥
पाना ज्यूँ पीळी पड़ी रे
(बाला) धान नहीं खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूँ जळै रे
(बाला), ज्यूँ दीपक सँग बाती ॥३॥
मने भरोसो रामको रे
(बाला) डूब तिरयो हाथी ।

दासि मीरा लाल गिरधर,
साँकड़ारो साथी ॥४॥

(११५) राग पूरिया धनाश्री–ताल तिताला

परम सनेही रामकी नित ओळूँ रे आवै ।
राम हमारे हम हैं रामके
हरि बिन कछू न सुहावै ॥१॥
आवण कह गये अजहुँ न आये
जिवड़ो अति उकळावै ।
तुम दरसणकी आस रमैया
कब हरि दरस दिखावै ॥२॥
चरणकँवळकी लगनि लगी नित
बिन दरसण दुख पावै ।
मीराकूँ प्रभु दरसण दीज्यौ
आणँद बरण्यूँ न जावै ॥३॥

(११६) राग पहाड़ी–ताल तिताला

हेली म्हाँस्यूँ हरि बिना रह्यो न जाय ॥
सासू लड़े, नणद म्हारी खीजे देवर रह्या रिसाय ।

चौकी मेलो म्हारे सजनी ताला द्यो न जड़ाय ॥
पूर्व जनमकी प्रीतो म्हारी कैसे रहै लुकाय ।
मीराके प्रभु गिरधरके बिन दूजो न आवे दाय ॥

(११७) राग खम्माच-ताल कहरवा

मीरा मगन भई हरिके गुण गाय ।
साँप पिटारा राणा भेज्या,
मीरा हाथ दिया जाय ।
न्हाय धोय जब देखन लागी,
सालिगराम गई पाय ॥१॥
जहरका प्याला राणा भेज्या,
इम्रत दिया बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवन लागी,
हो गई अमर अँचाय ॥२॥
सूळी सेज राणाने भेजी,
दीज्यो मीरा सुवाय ।

साँझ भई मीरा सोवण लागी,

मानो फूल बिछाय ॥३॥

मीराके प्रभु सदा सहाई,

राखे बिघन हटाय ।

भजन भावमें मस्त डोलती,

गिरधरपर बलि जाय ॥४॥

सिखावन

(११८) राग झँझोटी–ताल कहरवा

भज ले रे मन गोपाल गुना ।

अधम तरे अधिकार भजनसूँ,

जोइ आये हरि सरना ।

अबिसवास तो साखि बताऊँ,

अजामील गणिका सदना ॥१॥

जो कृपाल तन मन धन दीन्हों,

नैन नासिका मुख रसना ।

जाको रचत मास दस लागे,

ताहि न सुमरो एक छिना ॥२॥

बालापन सब खेल गमायो,

तरुण भयो जब रूप घना।

वृद्ध भयो जब आळस उपज्यो,

माया मोह भयो मगना ॥३॥

गज अरु गीधहु तरे भजनसूँ,

कोउ तर्यो नहिं भजन बिना।

धना भगत पीपामुनि सिवरी,

मीराकीहू करो गणना ॥४॥

(११९) राग रागश्री-ताल तिताला

राम नाम रस पीजै,

मनुआँ राम नाम रस पीजै।

तज कुसंग सतसंग बैठ नित,

हरि चरचा सुनि लीजै ॥१॥

काम क्रोध मद लोभ मोहकूँ,

बहा चित्तसे दीजै ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर,

ताहिके रंगमें भीजै ॥२॥

(१२०) राग शुद्ध सारंग-ताल कहरवा

चालो अगमके देस काळ देखत डरै ।

वहाँ भरा प्रेमका हौज हँस केळ्याँ करै ॥

ओढ़ण लज्जा चीर धीरजकों घाघरो ।

छिमता काँकण हाथ सुमतको मूँदरो ॥

दिल दुलड़ी दरियाव साँचको दोवड़ो ।

उबटण गुरुको ग्यान ध्यानको धोवणो ॥

कान अखोटा ग्यान जुगतको झूटणो ।

बेसर हरिको नाम चूड़ो चित ऊजळो ॥

पूँची है बिसवास काजळ है धरमको ।

दाँताँ इम्रत रेख दयाको बोलणो ॥

जौहर सील सँतोष निरतको घूँघरो ।
बिंदली गज और हार तिलक हरि प्रेमको॥
सज सोला सिणगार पहरि सोने राखड़ी ।
साँवलियाँसूँ प्रीति औरासूँ आखड़ी ॥
पतिबरताकी सेज प्रभूजी पधारिया ।
गावै मीराबाई दासि कर राखिया ॥

(१२१) राग हमीर-ताल रूपक

नहिं ऐसो जनम बारंबार ।
का जानूँ कछु पुन्य प्रगटे मानुसा अवतार ।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल जात न लागे बार ॥
बिरछके ज्यूँ पात टूटे लगे नहिं पुनि डार ।
भौसागर अति जोर कहिये अनँत ऊंडी धार ॥
रामनामका बाँध बेड़ा उतर परले पार ।
ज्ञान-चोसर मँडा चोहटे सुरत पासा सार ॥
साधु संत महंत ग्यानी करत चलत पुकार ।
दासि मीरा लाल गिरधर जीवणा दिन च्यार ॥

(१२२) राग छायानट–ताल तिताला

भज मन चरणकँवळ अबिनासी ।

जेताइ दीसे धरण गगन बिच,
तेताइ सब उठ जासी ।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे,
कहा लिये करवत-कासी ॥
इण देहीका गरब न करणा,
माटीमें मिल जासी ।
यो संसार चहरको बाजी,
साँझ पड्याँ उठ जासी ॥
कहा भयो है भगवा पहर्याँ,
घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगत नहिं जाणी,
उलट जनम फिर आसी ॥
अरज करूँ अबला कर जोड़े,
स्याम तुम्हारी दासी ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर,
काटो जमकी फाँसी ॥

(१२३) राग बिलावल–ताल कहरवा

लेताँ लेताँ राम नाम रे,
लोकड़ियाँ तो लाजाँ मरे छै ॥
हरिमंदिर जाता पाँवड़िया रे दूग्वे,
फिर आवे आखो गाम रे ।
झगड़ो थाय त्याँ दौड़ी ने जाय रे,
मूकी ने घरना काम रे ॥
भाँड भवैया गणिकात्रित करताँ
बेसी रहे चारे जाम रे ।
मीराना प्रभु गिरधर नागर,
चरणकँवळ चित हाम रे ॥

(१२४) राग बिहागरा—ताल चर्चरी

रमइया बिन यो जिवड़ौ दुख पावै ।
कहो कुण धीर बँधावै ॥

यो संसार कुबधको भाँडो,
साध-सँगत नहीं भावै।
राम नामकी निंद्या ठाणै,
करम-ही-करम कुमावै॥
राम नाम बिन मुकति न पावै,
फिर चौरासी जावै।
साध-सँगतमें कबहुँ न जावै
मूरख जनम गुमावै॥
मीरा प्रभु गिरधरके सरणैं
जीव परम पद पावै॥

प्रकीर्ण

(१२५) राग नीलाम्बरी-ताल कहरवा

सूरत दीनानाथसे लगी,
तूँ तो समझ सुहागण सुरता नार॥
लगनी लहँगो पहर सुहागण,
बीती जाय बहार।
धन जोबन है पावणा री,
मिलै न दूजी बार॥१॥

राम नामको चुड़लो पहिरो,
प्रेमको सुरमो सार।
नकबेसर हरि नामकी री,
उतर चलोनी परले पार ॥२॥
ऐसे बरको क्या बरूँ,
जो जनमै और मर जाय।
बर बरिये एक साँवरो री,
(मेरो) चुड़लो अमर होय जाय ॥३॥
मैं जान्यों हरि मैं ठग्यो री,
हरि ठग ले गयो मोय।
लखचौरासी मोरचा री,
छिनमें गेरया छै बिगोय ॥४॥
सुरत चली जहाँ मैं चली री,
कृष्ण-नाम झणकार।
अबिनासीकी पोळपर जी,
मीरा करै छै पुकार ॥५॥

(१२६) राग बिहाग–ताल तिताला

करम गत टारे नाहिं टरे ।
सतबादी हरिचँद-से राजा,
(सो तो) नीचघर नीर भरे ।
पाँच पांडु अरु कुंती द्रोपदी,
हाड हिमाळै गरे ॥
जग्य कियो बळी लेण इंद्रासण,
सो पाताळ धरे ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
बिखसे अम्रित करे ॥

(१२७) राग पीलू–ताल कहरवा

देखत राम हँसे सुदामाँकूँ देखत राम हँसे ।
फाटी तो फूलड़ियाँ पाँव उभाणे
चलतैं चरण घसे ।
बालपणेका मिंत सुदामाँ
अब क्यूँ दूर बसे ॥

कहा भावजने भेंट पठाई
तांदुळ तीन पसे।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया
हीरा मोती लाल कसे॥
कित गई प्रभु मेरी गउअन बछिया
द्वारा बिच हसती फसे।
मीराके प्रभु हरि अविनासी
सरणे तारे बसे॥

नाम

(१२८) राग धनाश्री-ताल तिताला

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी,
कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनमके खत जु पुराने,
नामहि लेत फटै रे॥
कनक कटोरे इम्रत भरियो,
पीवत कौन नटै रे।

मीरा कहे प्रभु हरि अबिनासी,
तन मन ताहि पटै रे ॥

(१२९) राग श्रीरञ्जनी-ताल तिताला

पायो जी म्हें तो राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ॥ १ ॥
जनम जनमकी पूँजी पाई,
जगमें सभी खोवायो ।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै,
दिन दिन बढ़त सवायो ॥ २ ॥
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर,
हरख हरख जस गायो ॥ ३ ॥

गुरु-महिमा

(१३०) राग धानी-ताल तिताला

मोहि लागी लगन गुरु-चरणनकी ।
चरण बिना कछुवै नहिं भावै
जग माया सब सपननकी ॥
भौसागर सब सूख गयो है
फिकर नहीं मोहि तरननकी ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर
आस वही गुरु-सरननकी ॥

(१३१) राग मलार-ताल कहरवा

लागी मोहिं राम खुमारी हो ।
रमझम बरसै मेहड़ा भीजै तन सारी हो ।
चहुँदिस दमकै दामणी गरजै घन भारी हो ॥
सतगुर भेद बताइया खोली भरम-किंवारी हो ।
सब घट दीसै आतमा सबहीसूँ न्यारी हो ॥

दीपग जोऊँ ग्यानका चढ़ूँ अगम अटारी हो ।
मीरा दासी रामकी इमरत बलिहारी हो ॥

(१३२) राग धानी-ताल कहरवा

री मेरे पार निकस गया सतगुर मार्‌या तीर ।
बिरह भाल लगी उर अंदर ब्याकुल भया सरीर ॥
इत उत चित्त चलै नहिं कबहूँ डारी प्रेम-जँजीर ।
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो और न जाणै पीर ॥
कहा करूँ मेरो बस नहिं सजनी नैन झरत दोउ नीर ।
मीरा कहै प्रभु तुम मिलियाँ बिन प्राण धरत नहिं धीर ॥

महाप्रभु चैतन्य

(१३३) राग मिश्र काफ़ी-ताल तिताला

अब तौ हरी नाम लौ लागी ।
सब जगको यह माखन-चोरा,
नाम धर्‌यो बैरागी ॥ १ ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली,
कित छोड़ी सब गोपी ।

मूँड़ मुँड़ाइ डोरि कटि बाँधी,
माथे मोहन टोपी ॥ २ ॥
मात जसोमति माखन कारन,
बाँधे जाके पाँव ।
स्याम किसोर भयो नव-गौरा,
चैतन्य जाको नाँव ॥ ३ ॥
पीतांबरको भाव दिखावै,
कटि कोपीन कसै ।
गौर-कृष्णकी दासी मीरा,
रसना कृष्ण बसै ॥ ४ ॥

सहजोबाईजी

गुरु-महिमा

(१३४) राग मलार-ताल तिताला

हमारे गुरु पूरन दातार ।

अभय दान दीननको दीन्हें,
कीन्हें भव-जल-पार ॥
जन्म-जन्मके बंधन काटे,
यमको बंध निवार ।
रंकहुते सो राजा कीन्हें,
हरि-धन दियो अपार ॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं,
योग बतावनहार ।
तन मन बचन सकल सुखदाई,
हिरदे बुधि-उँजियार ॥
सब दुख गंजन पातक भंजन,
रंजन ध्यान विचार ।

साजन दुर्जन जो चलि आवै,
एकहि दृष्टि निहार ॥
आनंदरूप स्वरूपमई है,
लिप्त नही संसार ।
चरनदास गुरु सहजो केरे,
नमो-नमो बारंबार ॥

(१३५) राग कामोद-ताल चर्चरी

सखी री आज आनँद देव बधाई ।
सतगुरुने औतार लियो है,
मिलि मिलि मंगल गाई ॥ १ ॥
अद्भुत लीला कहा बखानौं,
मोपे कही न जाई ।
बहु विधि बाजे बाजन लागे,
सुनत हिया हुलसाई ॥ २ ॥
धन भादौं धन तीज सुदी है,
जा दिन प्रगटे आई ।

धन धन कुंजो भाग तिहारे,

चरनदास सुत पाई ॥ ३ ॥

कलिजुगमें हरिभक्ति चलाई,

जनकी करें सहाई ।

श्रीसुकदेव करी जब किरपा,

गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

(१३६) राग सोरठ–ताल तिताला

हमारे गुरु-बचननकी टेक ।

आन धरमकूँ नाहीं जानूँ,

जपूँ हरि हरि एक ॥ १ ॥

गुरु बिना नहिं पार उतरे,

करौ नाना भेख ।

रमौ तीरथ बर्त राखौ,

होहु पंडित सेख ॥ २ ॥

गुरु बिना नहीं ज्ञान दीपक,

जाय ना अँधियार।

काम क्रोध मद लोभमाही,

उलझिया संसार॥ ३॥

चरनदास गुरु दया करकै,

दियो मंतर कान।

सहजो घट परगास हूआ,

गयौ सब अज्ञान॥ ४॥

(१३७) राग काफी—ताल तिताला

नैनों लख लैनी साईं तैंडे हजूर।

आगे पीछे दहिने बायें,

सकल रहा भरपूर॥ १॥

जिनको ज्ञान गुरूको नाहीं,

सो जानत हैं दूर।

जोग जज्ञ तीरथ व्रत साधैं,
पावत नाहीं कूर ॥ २ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिमीमें,
सोई हरिका नूर ।
चरनदास गुरु मोहिं बतायो,
सहजो सबका मूर ॥ ३ ॥

वेदान्त

(१३८) राग आसावरी-ताल तिताला

बाबा काया नगर बसावौ ।
ज्ञान दृष्टिसूँ घटमें देखौ,
सुरति निरति लौ लावौ ॥
पाँच मारि मन बसकर अपने,
तीनौं ताप नसावौ ।
सत संतोष गहै दृढ सेती,
दुर्जन मारि भजावौ ॥

सील छिमा धीरजकूँ धारौ,
अनहद बंब बजावौ ।
पाप बानिया रहन न दीजै,
धरम बजार लगावौ ॥
सुबस बास जब होवै नगरी,
बैरी रहै न कोई ।
चरनदास गुरु अमल बतायौ,
सहजो सँभलो सोई ॥

(१३९) राग बसन्त-ताल तिताला

आतम पूजा अधिक जान ।
सकल सिरोमन याहि मान ॥
बिस्तारो हित भवन माहिं ।
भरम दृष्टि जहँ आवै नाहिं ॥
हिरदा कोमल ठौर लिया ।
कर बिचार जहँ धूप दिया ॥

या सेवाका दया मूल।
समता चंदन छिमा फूल॥
मीठे बचन सोइ बालभोग।
निंदा झूठ तजो अजोग॥
घंटा अनहद सुरत लाव।
घट घट देखै एक भाव॥
करौ सुखी सुख आप लेव।
इस पूजासों सुखी देव॥
चरनदास गुरु दई मोहिं।
हंस हंस जहँ जाप होहि॥
इंद्री मन बुध तहँ लगाव।
कर सहजोबाई याको चाव॥

नाम

(१४०) राग सारंग-ताल तिताला

हमरे औषध नाँव धनीका।
आध-व्याध तन मनकी खोवै,
सुद्ध करै वह नीका॥ १॥

अमर भये जिन जिन यह खाई,
भव नगरी नहिं आये ।
जो पछ करैं सँभल दृढ़ राखै,
सतगुरु बैद बताये ॥ २ ॥
सतसंगतको भवन बनावै,
पड़दा लाज लगावै ।
जगत बासना पवन चलत है,
सो आवन नहिं पावै ॥ ३ ॥
शुभ करम लै टेक टहलुआ,
दीपक ज्ञान जलावै ।
नित्य अनित्य बिचार सार गहु,
हो आसार बगावै ॥ ४ ॥
जीव रूपके रोग भगैं यों,
ब्रह्म रूप ह्वै जावै ।
सहजोबाई सुन हुलसावै,
चरनदास बतलावै ॥ ५ ॥

(१४१) राग ईमन-ताल तिताला

ज्यों त्यों राम नाम ही तारै ।
जान अजान अग्नि जो छूवै,
वह जारै पै जारै ॥ १ ॥
उलटा सुलटा बीज गिरै ज्यों,
धरती माहीं कैसे ।
उपजि रहै निहचै करि जानौ,
हरि सुमिरन है ऐसे ॥ २ ॥
बेद पुराननमें मथि काढ़ा,
राम नाम तत सारा ।
तीन कांडमें अधिकी जानौ,
पाप जलावनहारा ॥ ३ ॥
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल,
ऊँची पदवी देवै ।
चरनदास कहैं सहजोबाई,
ब्याधा सब हरि लेवै ॥ ४ ॥

(१४२) राग कान्हरा-ताल तिताला

सठ तजि नाँव जगत सँग राचो ।
जेहि कारन बहु स्वाँग कछे हैं,
चौरासी तन धरि धरि नाचो ॥ १ ॥
गर्भ माहिं जे बचन किये थे,
एकहु बार भयो नहिं साँचो ।
स्वारथहीको उठि उठि धावै,
राम भजन परमारथ काचो ॥ २ ॥
संतनकी टकसाल चढ़ो ना,
गुरकी हाट कबहुँ नहिं जाँचो ।
पंच बिषंके मदमें मातो,
अभिमानी है बहुतक नाचो ॥ ३ ॥
जमद्वारेकी लाज न मानी,
नरक अगिनकी सहि सहि आँचो ।
चरनदास कहै सहजो बाई,
हरिकी सरन बिना नहिं बाचो ॥ ४ ॥

(१४३) राग भैरवी-ताल तिताला

भया हरि रस पी मतवारा।
आठ पहर झूमत ही बीतै,
डार दिया सब भारा॥ १॥
इडा पिंगला ऊपर पहुँचे,
सुखमन पाट उघारा।
पीवन लगे सुधारस जबहीं,
दुर्जन पड़ी बिडारा॥ २॥
गंग जमन बिच आसन मार्यौ,
चमक चमक चमकारा।
भँवर गुफामें दृढ़ ह्वै बैठे,
देख्यो अधिक उजारा॥ ३॥
चित इस्थिर चंचल मन थाका,
पाँचौंका बल हारा।
चरनदास किरपासूँ सहजो,
भरम करम हुए छारा॥ ४॥

(१४४) राग बसंत-ताल तिताला

मिलि गावो रे साधो यह बसंत ।
जाकी अविगत लीला अगम पंथ ॥
जहँ नाँव पदारथ है इकंग ।
नहिं पैये दूजा और अंग ॥
जहँ दरसै साधो एक एक ।
नहिं पैये दूजा कोई भेष ॥
जहँ ज्ञान ध्यानको लागो तार ।
जहँ आप विराजै ओंकार ॥
देखो सब घट व्यापक निराकार ।
कोई न पावै वह विचार ॥
जहँ ब्रह्म अखंडित अति अनूप ।
जाको सुर-मुनि-योगी ध्यावै भूप ॥
जहँ छाय रहो है सर्ब माहिं ।
कोइ नहिं संतो खाली ठाहिं ॥

गुरु चरनदास पूरन औतार ।
जिन दान दियो जग ब्याध टार ॥
सहजोबाई नावै सीस ।
मेरे भ्रम मेटे बिस्वा बीस ॥

(१४५) राग ललित-ताल तिताला

जाग जाग जो सुमिरन करै ।
आप तरै औरन लै तरै ॥टेक॥
हरिकी भक्ति माहिं चित देवै ।
पदपंकज बिनु और न सेवै ॥
आन धरमकूँ संग न लेवै ।
फलन कामना सब परिहरै ॥ १ ॥
काल ज्वाल सब ही छुट जावै ।
आवागमनकी डोरि नसावै ॥
जोनी संकट फिर नहिं आवै ।
बार बार जनमै नहिं मरै ॥ २ ॥

ऊँची पदवी जगमें पावै।
राजा राना सीस नवावै॥
तन छूटे जा मुक्ति समावै।
जो पै ध्यान धनीका धरै॥ ३॥
ह्याँपै सुख जो जानै कूरा।
गुर चरननमें लागै पूरा॥
वेग सम्हारै जो जन सूरा।
चरनदास सहजो हो अरै॥ ४॥

लीला

(१४६) राग बिलावल-ताल तिताला

मुकुट लटक अटकी मनमाहीं।
नृत्यत नटवर मदन मनोहर,
कुंडल झलक पलक बिथुराई॥ १॥
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल,
होठ मटक गति भौंह चलाई।

ठुमक ठुमक पग धरत धरनिपर,
बाँह उठाय करत चतुराई ॥ २ ॥
झुनक झुनक नूपुर झनकारत,
ताता थेई थेई रीझ रिझाई ।
चरनदास सहजो हिय अंतर,
भवन करौ जित रहौ सदाई ॥ ३ ॥

महिमा

(१५७) राग परज-ताल कहरवा

तेरी गति किनहुँ न जानी हो ।
ब्रह्मा सेस महेसुर थाके, चारों बानी हो ॥
बाद करंते सब मत थाके, बुद्धि थकानी हो ।
बिद्या पढ़ि पढ़ि पंडित थाके, ब्रह्मगियानी हो ॥
सबके परे जुअन मम हारी, थाह न आनी हो ।
छान बीनकर बहुतक थाकी, भई खिसानी हो ॥
सुर-नर-मुनी गनपती थाके, बड़े बिनानी हो ।
चरनदास थकी सहजोबाई, भई सिरानी हो ॥

प्रार्थना

(१४८) राग भैरौं-ताल चर्चरी

हम बालक तुम माय हमारी ।
पल-पल माहिं करौ रखवारी ॥ १ ॥
निस दिन गोदीहीमें राखो ।
इत उत बचन चितावन भाखो ॥ २ ॥
विषै ओर जान नहिं देवो ।
दुर दुर जाउँ तो गहि गहि लेवो ॥ ३ ॥
मैं अनजान कछू नहिं जानूँ ।
बुरी भलीको नहिं पहिचानूँ ॥ ४ ॥
जैसी तैसी तुमहीं चीन्हेव ।
गुर ह्वै ध्यान खिलौना दीन्हेव ॥ ५ ॥
तुम्हरी इच्छाहीसे जीऊँ ।
नाम तुम्हारो इमृत पीऊँ ॥ ६ ॥

दिष्टि तिहारी ऊपर मेरे ।
सदा रहूँ मैं सरनै तेरे ॥ ७ ॥
मारौ झिड़कौ तौ नहिं जाऊँ ।
सरक-सरक तुमहीं पै आऊँ ॥ ८ ॥
चरनदास है सहजो दासी ।
हो रक्षक पूरन अबिनासी ॥ ९ ॥

(१४९) राग रामकली-ताल तिताला

अब तुम अपनी ओर निहारो ।
हमरे औगुनपै नहिं जाओ,
तुमहीं अपना बिरद सम्हारो ॥ १ ॥
जुग जुग साख तुम्हारी ऐसी,
बेद पुरानन गाई ।
पतित उधारन नाम तुम्हारो,
यह सुनके मन दृढ़ता आई ॥ २ ॥

मैं अजान तुम सब कछु जानो,

घट घट अंतरजामी ।

मैं तो चरन तुम्हारे लागी,

हो किरपाल दयालहि स्वामी ॥ ३ ॥

हाथ जोरिकै अरज करत हौं,

अपनाओ गहि बाहीं ।

द्वार तिहारे आय परी हौं,

पौरुष गुन मोमें कछु नाहीं ॥ ४ ॥

चेतावनी

(१५०) राग सारंग-ताल कहरवा

सुमिर-सुमिर नर उतरो पार,

भौसागरकी तीछन धार ॥टेक॥

धर्म जहाज माहिं चढ़ि लीजै,

सँभल सँभल तामें पग दीजै ।

स्रम करि मनको संगी कीजै,
हरि मारगको लागो यार ॥ १ ॥
बांदवान पुनि ताहि चलावै,
पाप भरे तौ हलन न पावै ।
काम क्रोध लूटनको आवै,
सावधान है करौ सँभार ॥ २ ॥
मान पहाड़ी तहाँ अड़त है,
आसा तृस्ना भँवर पड़त है ।
पाँच मच्छ जहँ चोट करत हैं,
ज्ञान आँखि बल चलौ निहार ॥ ३ ॥
ध्यान धनीका हिरदै धारे,
गुरु किरपासूँ लगै किनारे ।
जब तेरी बोहित उतरै पारे,
जन्म मरन दुख बिपता टार ॥ ४ ॥
चौथे पदमें आनँद पावै,
या जगमें तू बहुरि न आवै ।

चरनदास गुरुदेव चितावें,
सहजोबाई यही बिचार ॥ ५ ॥

(१५१) राग होरी सिंदूरा-ताल धमार

साधो भौसागरके माहिं,
काल होरी खेलाई ॥टेक॥
भाँति-भाँतिके रंग लिये हैं,
करत जीवनकी घात ।
बूढ़ा बाला कछू न देखै,
देखै ना दिन रात ॥ १ ॥
निहचै मौत लिये सँग रानी,
नाना रंग सम्हार ।
बड़े बड़े अभिमानी नामी,
सो भी लीन्हें मार ॥ २ ॥
सुरज चंद वा भयतें काँपैं,
स्वर्ग माहिं सब देव ।

तनधारी सब ही पर्चावैं,

ज्ञानी जानत भेव ॥ ३ ॥

आपनकूँ देही नहिं जानै,

जानत आतम साँच ।

चरनदास कह सहजोबाई,

ताहि न आवै आँच ॥ ४ ॥

(१५२) राग होरी धनाश्री-ताल चर्चरी

साधो मन मायाके संग,

सब जग रंग रह्यो ॥ टेक ॥

मूरख पचे खेलके अँधरे,

नाना स्वाँग बनाय ।

आसा धरि धरि नाचन लागे,

चोवा चाह लगाय ॥ १ ॥

जोग करै सिधि आठौं चाहै,

मान बड़ाई हेत ।

राज बासना भोग लोकके,

काशी-करवत लेत ॥ २ ॥

पंच अगिन बहु तापन लागे,

बहुत अर्धमुख झूल ।

बहुतक दौड़ें अड़सठ तीरथ,

ज्ञान गली गये भूल ॥ ३ ॥

चरनदास गुरु तत्त्व लखायो,

दीन्हें खेल छुटाय ।

सहजोबाई सीस नवावत,

बार-बार बलि जाय ॥ ४ ॥

(१५३) राग काफी-ताल कहरवा

हरि हर जप लेनी, औसर बीतो जाय ।

जो दिन गये सो फिर नहिं आवैं,

कर बिचार मन लाय ॥

या जग बाजी साच न जानो,
तामें मत भरमाय ।
कोइ किसीका है नहिं औरे,
नाहक लियो लगाय ॥
अंत समय कोइ काम न आवै,
जब जम लेहि बोलाय ।
चरनदास कहैं सहजोबाई,
सत-संगत सरनाय ॥

(१५४) राग बिलावल-ताल दादरा

हरि बिनु तेरो ना हित, कोऊ या जग माहीं ।
अंत समय तू देखि ले, कोई गहै न बाहीं ॥
जमसूँ कहा छुटा सकै, कोई संग न होई ।
नारी हूँ फटि रहि गई, स्वारथ कूँ रोई ॥
पुत्र कलत्तर कौनके, भाई अरु बंधा ।
सब ही ठोंक जलाइ हैं, समझै नहिं अंधा ॥

महल दरब ह्याँ ही रहै, पचि-पचि करि जोड़ा ।
करहा गज ठाढ़े रहैं, चाकर अरु घोड़ा ॥
पर काजै बहु दुख सहै, हरि-सुमिरन खोया ।
सहजोबाई जम घिरैं, सिर धुनि-धुनि रोया ॥

(१५५) राग बसंत-ताल तिताला

ऐसो बसंत नहिं बार-बार ।
तैं पाई मानुष-देह सार ॥
यह औसर बिरथा न खोय ।
भक्ति-बीज हिये-धरती बोय ॥
सतसंगतको सींच नीर ।
सतगुरजीसों करौ सीर ॥
नीकी बार बिचार देव ।
परन राख याकूँ जु सेव ॥
रखवारी कर हेत-खेत ।
जब तेरी होवै जैत जैत ॥

खोट-कपट-पंछी उड़ाव।

मोह-प्यास सब ही जलाव॥

समझै बाड़ी नऊ अंग।

प्रेम फूल फूलै रंग-रंग॥

पुहुप गूँथ माला बनाव।

आदिपुरुषकूँ जा चढ़ाव॥

तौ सहजोबाई चरनदास।

तेरे मनकी पूरै सकल आस॥

(१५६) राग सोरठ-ताल रूपक

जगमें कहा कियो तुम आय।

स्वान जैसो पेट भरिकै,

सोयो जन्म गँवाय॥

पहर पछिले नाहिं जागो,

कियो ना सुभ कर्म।

आन मारग जाय लागो,
लियो ना गुरु धर्म ॥
जप न कीयो तप न साधो,
दियो ना तैं दान ।
बहुत उरझे मोह मदमें,
आपु काया मान ॥
देह घर है मौतका रे,
आन काढ़ै तोहि ।
एक छिन नहिं रहन पावै,
कहा कैसो होय ॥
रैन दिन आराम ना,
काटै जो तेरी आव ।
चरनदास कहैं सुन सहजिया,
करौ भजन उपाव ॥

मञ्जुकेशीजी

योगज्ञान

(१५७) राग सोरठ-ताल तिताला

आपन रूप परखिये आपै ।
निज नयनन ही निज मुख दीखत
अपनो सुख-दुख आपुई ब्यापै ।
अपनी गति बनै आपु बनाये
जाड़ जात निज तन तप तापै ॥
निज करसों निज आसुँ पोंछिये
का सुझाय सुइ करसों छापै ।
तटपै बसि प्रशांत जल निरखहु
का क्षति-लाभ सिंधुतल मापै ॥
गहत न लहत बृथा दिन खोवत
कथत-मथत ही शास्त्र कलापै ।
'केशी' आत्म-प्रतीति फुरति है
रामनाम अब्याहत जापै ॥

(१५८) राग ललित-ताल तिताला

जो चौदह रसको पहिचानै ।
सो चेतिहि त्रिधिबस कौनीहू
योनि जनमि बौरानै ॥
त्रिश्ववास हरि परखत-भरखत
को समीप नियरानै ?
'केशी' दया-धरम ना छोड़िय
जो बिरहिनि दुख जानै ॥

(१५९) राग सोरठ-ताल रूपक

निर्मल मानसिक आवास ।
मलिन भाव बुहारि फेंकहु स्वच्छ करहु देवास ।
खींचि नभतैं मदहि गारो मदन उलटो रास ॥
छरस नवरस पंचरस महँ बहै एक बतास ।
कहति 'केशी'मठ सँवारहु करहि जिहि हरिबास ॥

(१६०) राग सारंग-ताल तिताला

चंचल मनको बस करिय कसस ।
योगी-मुनि ऐसे बरबरात,
परमार्थ पथिक जिहि लखि डरात ।
अभ्यास बिरति युग बिधि लखात,
गीतामों श्रीमुख बचनहु अस ॥
हनुमत-मत मनहिं कहिय हरि यस,
जिहि भावै वाको रामैरस ।
'केशी' बढ़ै उर प्रेम जसस,
थिर हो मन प्यारे तसस-तसस ॥

(१६१) राग विहाग-ताल तिताला

राम-रहसके ते अधिकारी ।
जिनको मन मरि गयउ और मिटि गई कल्पना सारी ॥
चौदह भुवन एक रस दीखे एक पुरुष इक नारी ।
'केशी' बीजमंत्र सोइ जाने ध्यावै अवधबिहारी ॥

(१६२) राग हमीर-ताल तिताला

अनुभवकी बात कोउ-कोउ जानै ।
कोउ नयनहीन, कोउ मन मलीन
कोउ-कोउ मेधामें रति मानै ।
जंजाल वर्णफल पाँचकेर
द्विजको अस जो चीरै तानै ॥
सतरहो साधि चतुराग्नि तापि
पंचम कृशानु महँ प्रण ठानै ।
लागै जब महाप्रलयकी लपट
'केशी' तब हर बूटी छानै ॥

(१६३) राग भैरवी-ताल तिताला

संयम साँचो वाको कहिये ।
जामें राम-मिलनकी मुक्ता
गजराजन प्रति लहिये ।
मोहनिशा महँ नींद उचाटै
चरण शिवा-शिव गहिये ॥

भूर्भुवः स्वःके ओंकनतैं
बार-बार बचि रहिये ।
नवल नेह नित बाढ़ै 'केशी'
कहहु और का चहिये ॥

(१६४) राग काफी–ताल तिताला

चेतहु चेतन बीर, सबेरे ।
इष्ट-स्वरूप बिठारहु मनमें
करकमलन धनुतीर ।
एकछटा करुणावारिधिकी
अनुछन धारहु धीर ॥
भक्त-विपति-भंजन रघुनायक
मंत्र विशद हर-पीर ।
'केशो' प्रीतम पाँव पखारिय
ढारि सुनयनन-नीर ॥

(१६५) राग सोरठ-ताल तेवरा

दर्शक, दीप-दर्शन दूर ।
शून्य विपिन विचित्र मंदिर ज्योति रह भरपूर ।

झुंड-झुंड चलीं नवेली मग उड़ावति धूर ॥
करि प्रबेश सुद्वार चारिहु गईं जहँ प्रिय सूर ।
लव निरखि पाँखी-सरिस सब भईं चकनाचूर ॥

(१६६) राग सोरठ-ताल रूपक

शांति एक आधार, सन्मुख ।
राम सहज स्वरूप झलकत भावयुत शृंगार ।
कहत याको सिद्ध योगी तिलकी ओट पहार ॥
छाड़ि यह दुर्लभ नहीं कछु करत संत बिचार ।
सुखसिंधु सुखमाकंद 'केशी' परम पुरुष उदार ॥

(१६७) राग सारंग-ताल रूपक

खेलत राम पूतरि माहिं ।
छाड़ि परमारथ-रसिक कोउ भेद जानत नाहिं ॥
यही जग है यही सग है शत्रु-मित्र कहाहिं ।
ज्ञान बिनु सब लोग 'केशी' चारि-आठ भ्रमाहिं ॥

(१६८) राग सिंदूरा-ताल तिताला

बारे जोगिया, कवन बिपिन मँह डोलै ?
नेती-धोती साजि सलोने
मूल कमलदल खोलै ।
चर्म दृष्टिकी सृष्टि निधन करि
कस न बदल दे चोलै ॥
माहुर अँचै चाटि मधुपिपली
काढ़त जीके फफोलै ।
'केशी' कस डोलत लटकाये
कोह-मोहके झोलै ॥

(१६९) राग श्याम कल्याण-ताल तिताला

आश्रम सुखद सुसंयम पाये ।
बटु विश्राम शब्द-बट छाया शुक्र बीज तिहि गाये ।
गृही सुखी सुरसाल-छाहँ तर काल-सुकाल सुभाये ॥
पाकर तरुतर वैखानस बसु पीपर यति मन भाये ।
'केशी' चारि वृक्ष सिखवत हैं आश्रम हेतु सुहाये ॥

(१७०) राग भैरवी-ताल तिताला

कामद गिरिढिग डेरा कीजै ।
अर्द्धरात्रि महँ बैठि शिलापर
सुखद शांतिरस पीजै ।
वाद्य अनेक भाँति श्रवनन करि
आस अनाहत लीजै ॥
सुरदुर्लभ यह रहस सनातन
लहब पुरारि पसीजै ।
'केशी' की यह रुचिर पद्दुनई
प्रिय स्वीकार करीजै ॥

(१७१) राग चन्द्रकान्त-ताल तिताला

गजरिपु व्रत सराहन-योग ।
है सदा एकांतवासी तिहि न योग-वियोग ॥
जनक-जननी जो सिखायउ सोइ परम उद्योग ।
भक्ष मिलु निज बाहुबलसे तिहि लगावत भोग॥

सकत आँख मिलाय नहिं थकि जकि बहादुर लोग ।
अभय डोलत 'केशि' मृगपति उर न धारत सोग ॥

(१७२) राग गौरी-ताल तिताला

भुवन-बिच एकै दीप जरै ।
कितने सलभ गिरे दीपकपर कहि-कहि हरे-हरे ॥
वेदशिरा मुनि शिखा जोहते जो इकतार बरै ।
'केशी' अलख ज्योतिपर हुत हो सो भव अगम तरै ॥

(१७३) राग चैता-ताल कहरवा

देखेउ जो नीचे, हो रामा, कि ऊँचे चढ़िके री ।
तारा एक सबुज रँग चमकै मानों अतिहि न नीचे ।
यान हमार गगन महँ विचरत पवन पखेरू खींचे ॥
घर-घर एकै लेखा, लखियत गुनियत कं खं बीचे ।
'केशी' दाग न मिटिहै कबहूँ बिना कमलदह फींचे ॥

(१७४) राग चन्द्रकांत-ताल तिताला

चार जुगनू झलाझल झमकै ।
आशुतोषनै दियो जुगुनवा चंद्रकिरन सम दमकै ।

या जुगनूपर बिके बिधाता दिव्य गगनमहँ चमकै ॥
साधु सुजान सराहत छबिको नीलकलेवर छमकै ।
'केशी' कौतुक कामधर्नाको भक्तनके उर रमकै ॥

(१७५) राग विहाग-ताल तिताला

बामन बलिको छलिगे मीत ।
कहत सबै समुझत कोउ-कोऊ, कोऊ करै परतीत ॥
मोहिं अचंभा लागत मैया, गावत भगवत-गीत ।
'केशी' रामधर्मकी महिमा जानै का जन क्रीत ॥

(१७६) राग सोरठ-ताल तिताला

धरतीमें पानी बास करै ।
छमा करो तो प्रेम प्रकट हो
मरनीसे करनी सुफल फरै ॥
कोह-खोहमैं पामर पचते
अरनी बिनु आपै आप जरै ।
'केशी' नीति सिखायिये वाको
तरनीमें जो कोउ पाँव धरै ॥

(१७७) राग लहरा-ताल तिताला

चौरासी मठके मठधारी ।
भोग त्यागि किन अलख जगावहु आपन रूप सम्हारी॥
चढ़ो गोमती चलि आई ढिग बलिहारी-बलिहारी ।
'केशी' मैयाकी धारामें बही हमारी सारी ॥

(१७८) राग मालीश्री-ताल तिताला

मधुमाखी जरै नहिं दीपकपै ।
वह तो बटोरति सुमननको रस
सेवति वाको तन-मन दै ॥
भोग-समय नर छीनत छत्ता
खीझति छीजति सरबस ख्वै ।
'केशी' केवल शलभ सयानो
उमँगि जात तहँ आहुत है ॥

(१७९) राग झँझौटी-ताल झप

सदय हृदयकी सरस कहानी ।
योगी कह्यो सदा सुख भोगी ध्रुव समान सो ध्यानी ॥

पार्वतीपति कृपापात्र सो अरु बिदेह-सम ज्ञानी ।
'केशी' रघुबरको सोइ भावै निश्छल भक्त अमानी ॥

(१८०) राग पीलू-ताल कहरवा

भावभोगी हमारे नयना ।
आप सरी, ताप भरी, नेह झरी, छेमकरी
पूतरि सरोतरि सजग गैना ।
भूपरक, भ्रूभरक, भवझरक, धूतरक
'केशी' पुकारै दिन-रैना ॥

उपदेश

(१८१) राग रागश्री-ताल झप

रामधनीसे हेत नहीं जो ।
उदय-अस्तको राज्य व्यर्थ है,
जो न प्रेम रघुबंश मनीसे ।
फरद खाय बहुत दिन जीवै,
पार लहै ना निज करनीसे ॥

तीनों लोक शोक सम तिनको
जो ब्याकुल हैं भवरजनीसे ।
'केशी' जाते हाथ पसारे
लोन उठावत हैं पपनीसे ॥

(१८२) राग मलार–ताल रूपक

छिन-सुख-लागि मानुष मरै ।
बिषय-रसमें मिल्यो माहुर तिहि उतारत गरै ।
नाभिचक्र उलटि परै अरु तखन-फुस फुस जरै ॥
हरिकृपा बिनु कहहु कैसे कवन यह दुख हरै ?
कैसे 'केशी' अमल-सुख-पथ जीव जंगम चरै ॥

(१८३) राग झँझौटी–ताल तिताला

निर्मल मनको एक स्वभाव ।
परिहर सीयराम-पद-पंकज
चिंतत और न काउ ।
जस-जस सखि बुँदियात बदरवा,
तस-तस कोमल भाउ ॥

एकरस बरसत नेक न जानत,
कौन रंक को राउ।
'केशी' काम कलाधर चीन्हत,
चपल चंद्रिका चाउ॥

(१८४) राग परज-ताल तिताला

जो मानै मेरी हित सिखवन।
तो सत्य कहूँ निज मनकी बात,
सहिये हिम-तप-वर्षा-रु-बात।
कसिये मनको सब भाँति तात,
जासों छूटै यह आवागमन॥
पहिले पक्षी पृथ्वी पगुरत,
फिर पंख जमे नभमें बिचरत।
अवसर आये जलमें पैरत,
पै भूलत नहिं निज मीत पवन॥
करुणानिधानकी बानि हेरि,
पुनि महामंत्र गज ध्वनिसों टेरि।

'केशी' सिय-स्वामिनि केरि चेरि,

समुझावति ध्यायिय सीतारवन ॥

(१८५) राग पूरबी-ताल तिताला

भजन करिय निष्काम, हमारे प्यारे ।

नयन आँजि मन माँजि चेतिये सगुन ब्रह्म श्रीराम ।

अश्व ह्रस्व-दीर्घ मत होवै ऐसो कसिये लगाम ॥

क्षुब्ध बासना दुग्धधार सम मन्मथको बिश्राम ।

'केशी' रामहिं द्वैत न भावै सब बिध पूरण काम ॥

(१८६) राग सोहनी-ताल तिताला

जागहु पंथी भयउ बिहाना ।

सोवत बीती सारी रैनिया अब उठि करहु पयाना ।

मेरु श्रृंगपर बैठि मुदित मन करिय रामको ध्याना ॥

चखनि-झखनिको तिरबेनीमँह तारिय बोरिय प्राना ।

'केशी' राम-नामकी धूनी सबहिं चिताय जगाना ॥

(१८७) राग भैरवी-ताल तिताला

मानहु प्यारे, मोर सिखावन ।
बूँदै-बूँद तलाव भरत है का भादों का सावन ॥
तैसहि नाद-बिंदुको धारण अंतःसुख सरसावन ।
ध्वनि गूँजै जब युगल रंध्रसे परसै त्रिकुटी पावन ॥
हियकी तीव्र भावना थिर करु पड़ै दूधमें जावन ।
'केशी' सुरति न टूटन पावै दिव्य छटा दरसावन ॥

(१८८) राग झँझौटी-ताल तिताला

बिषयरस पान-पीक-सम त्याग ।
बेद कहैं मुनि-साधु सिखावैं बिषय समुद्री आग ।
को न पान करि भो मतवाला यह ताड़ीको झाग ॥
बीतराग-पद मिलन कठिन अति काल-कर्मके लाग ।
'केशी' एकमात्र तोहिं चाहिय रामचरण-अनुराग ॥

(१८९) राग कल्याण–ताल तिताला

धाय धरो हरिचरण सबेरे ।
को जानै कै बार फिरे हम चौरासीके फेरे ।
जन्मत-मरत दुसह दुख सहियत करियत पाप घनेरे॥
भूलि आपनो भूप रूप भये काम कोहके चेरे ।
'केशो' नेक लही नहिं थिरता काल-कर्मके पेरे ॥

(१९०) राग सोहनी–ताल झप

भावत रामहिं संयम इकरस ।
भक्त भावना दृढ़ होवै तब,
जब अर्पिय रघुपतिपर सरबस ।
शील निधान सुजान शिरोमणि,
परम स्वतंत्र दास-सेवा बस ॥
जो नहिं प्रेमवारि मन धोवै,
सो सोवै सुख सहित कहहु कस ।
'केशी' पाँच तत्त्व तीनों गुन,
जो नाशै सोई पावै जस ॥

(१९१) राग सोरठ-ताल रूपक

भावुक, भावमय भगवान ।
तात बिनु भव चाप टूटे नाहिं तव कल्यान ॥
चारु चितमें चोप चिखुरत चपल चरु चुचुहान ।
बिरह चिनगी चमकि चटकै करहु अनुसंधान ॥
आत्महित साधन सकल इमि कहत बेद-पुरान ।
नाम नेह तुरीय तावै धरति 'केशी' ध्यान ॥

(१९२) राग सोरठ-ताल रूपक

कलि-प्रपंच-प्रसार, देखहु ।
जहाँ सूइहुकी नहीं गति तहाँ मुसळ प्रचार ।
रसवती युवती बसन गहि चहत करन उघार ॥
नटी जलमँह पैठि बोले करहु लोक-सुधार ।
कामधेनु बिसुकिहि 'केशी' बाँझ गाय दुधार ॥

(१९३) राग सोरठ-ताल रूपक

रे मन, देश आपन कौन ?
जहँ बसै प्रियतम प्रकृतिपति सुमुख सीता-रौन ॥

त्रिना समुझे बिना बूझे करै इत-उत गौन ।
सुख मिलत नहिं तोहिं सपने सदा खोजत जौन ॥
अजहुँ सूझत नाहिं तोहिं कछु करत आयुहि हौन ।
कहति 'केशी' तहाँ चलु झट जहाँ अबिचल भौन ॥

(१९४) राग तिलंग-ताल झप

मारे रहो, मन ।
राम-भजन बिनु सुगति नहीं है,
गाँठ आठ दृढ़ पारे रहो ।
अबिश्वास करि दूरि सर्वथा,
एक भरोसा धारे रहो ॥
सदा खिन्नप्रिय सिय-रघुनंदन,
जानि दर्प सब डारे रहो ।
'केशी' राम-नामकी ध्वनि प्रिय,
एक तार गुंजारे रहो ॥

(१९५) राग कामोद-ताल तिताला

चतुर कहात, सुंदर ।
करिबो भजन असल स्वारथ है,
जिहि बिधि सधै सधात ।
परहित निरत उचित रहिबो है,
पुष्ट होत है गात ॥
जनकराज रहनी गहिबे ते,
किल कल्यान जनात ।
'केशी' नीति-निपुनता अपनी,
या छिन परखी जात ॥

(१९६) राग रामकली-ताल रूपक

जन-हित राम धरत शरीर ।
भक्तवर प्रह्लादहित नरहरि भये रघुबीर ।
द्रौपदी पत राखिबेको बनि गये प्रभु चीर ॥
सकल भ्रम तजि भजिय रघुबर शांत-दांत-गभीर ।
भक्तके हित धरे 'केशी' करकमल धनु-तीर ॥

(१९७) राग जैजैवंती-ताल तिताला

कब हरि सुमिरनमें रस पैये ।
चिंतनकी चौघड़िया जानै,
बिज्ञान-बिरति-बल सब त्यागै ।
अरु बिमल भाव मति-गति पागै,
'केशी' हरि पै बलि-बलि जैये ॥

(१९८) राग झँझौटी-ताल तिताला

रामलगन माते जे रहते ।
तिनकी चरण-धूरि ब्रह्मादिक,
सिर धारनको चहते ।
याही ते मानव-शरीरकी,
महिमा बुधजन कहते ॥
सो बपु पाय भजे राम नहिं
ते शठ डहडह डहते ।
'केशी' तोहिं उचित मारग सोइ
जिहि मुनिनायक गहते ॥

(१९९) राग पीलू–ताल तिताला

हम न जावैं कनक-गिरि-खोहा ।
जे जे गये नहीं लौटे पुनि उन्हें बहुत हम जोहा ।
तहाँ बिकट धनपूत बसत हैं को ले उनसे लोहा ॥
आदि-अंत कोउ बूझत नाहीं कौन माल यह पोहा ।
'केशी' खोह नबेली अजहूँ कितने जन-मन मोहा ॥

(२००) राग भैरों–ताल तिताला

सुख सजनी मिलै नहिं अग जगमें ।
धर्मराज नल आदि नृपतिगण,
झूलि रहे सखि, या मगमें ।
केते मुनि-ऋषि खोजत हारे
काँटे चुभा लिये पग-पगमें ॥
बहुबिधि सबिधि कर्म-धर्महु करि,
कीन्हें श्रम जप-तप जगमें ।
'केशी' बिनु हरि-भक्ति न थिर भये,
आये-गये नर-नग-खगमें ॥

(२०१) राग पूरबी–ताल तिताला

गोसाईं मत, सुजन सगा सोइ आली ।
प्रेम-अटापै राम-छटा लखि जो जूझै दै ताली ।
नश्वर देह-गेह मँगनीको ठादि भुलावनवाली ॥
मोह-रूपिणी धर्म-धूतिनी काल-कूटनी काली ।
'केशी' भलो सजन घर रहना सहना मीठी गाली ॥

लीला

(२०२) राग चैता–ताल कहरवा

धावत राम बकैयाँ, हो रामा, धूरि भरे तन ।
कौर लिये कर पाछे डोलति श्रीकौशल्या मैया ॥
लै कनियाँ झारत आँचरसों धूसर धूर-धुरैया ।
'केशी' योगी ठाढ़ असीसत कुँवर जियाव गुसैंया ॥

(२०३) राग बहार–ताल तिताला

बन बिहरैं हमारे धनुषवारे ।
श्याम-गौर मुनिवेष सँवारे,
कसिकै तूण कमर डारे ।

संग सीय शोभाकी मूरति,
बनबासिन मन मोहिया रे ॥
सखि चलु जन्म सफल करु या छिन,
बड़े भाग बन पगु धारे ।
'केशी' मह् किरातिन बनिहौं,
कहति शची गगनागारे ॥

(२०४) राग पूरबी–ताल कहरवा

'राम गरीब-निवाज' गुसाईं-बानी ।
हियको हेत सदा जो हेरत,
क्षमाशील सिरताज ।
कहाँ निषाद-गीध अरु शबरी,
कहँ रघुकुल महराज ॥
प्रिय सौमित्रि-मान भंजन किये,
बिरुदावलिके काज ।
'केशी' कीट-भृंगकी संगति,
लोक काजके ब्याज ॥

(२०५) राग हिंडोल–ताल तिताला

आँगनमें खेलत रघुराई ।
घूरि बटोरि लिंग शिव थापत
अक्षत छींटत हरषाई ॥
लै गडुआ सौमित्रि खड़े हैं
सचिव-सुवन हर-हर गाई ।
बैठे भूप वसिष्ठ निहारत
'केशी' लाहु नयन पाई ॥१॥

(२०६) राग चैता–ताल कहरवा

बाजी बँसुरिया हो रामा कि दियरा बारत री !
बाती बरी जरी तरजनिया काँपति चार अँगुरिया ॥
कृष्ण कहैं अब राम भजहु सब रोम-रोम प्रति तुरिया ।
'केशी' तम फाटे मग झलकै कहिगे माधवपुरिया ॥

बनीठनी

(रसिकबिहारी)

लीला

(२०७) राग कल्याण-ताल तिताला

रतनारी हो थारी आँखड़ियाँ।
प्रेम छकी रसबस अलसाणी,
जाणे कमलकी पाँखड़ियाँ ॥
सुंदर रूप लुभाई गति मति,
हो गईं ज्यूँ मधु माँखड़ियाँ।
रसिकबिहारी वारी प्यारी,
कौन बसो निस काँखड़ियाँ ॥

(२०८) राग आसावरी—ताल कहरवा

हो झालो दे छे रसिया नागर पनाँ।
साराँ देखे लाज मराँ छाँ आवाँ किण जतनाँ ॥
छैल अनोखो कह्यो न मानै लोभी रूप सनाँ।
रसिकबिहारी नणद बुरी छै हो लाग्यो म्हारो मनाँ ॥

(२०९) राग खम्माच-ताल कहरवा

पावस रितु बृंदाबनकी दुति
दिन दिन दूनी दरसै है,
छबि सरसै है लूमझूम यों
सावन घन घन बरसै है ॥ १ ॥
हरिया तरवर सरवर भरिया
जमुना नीर कलोलैं है,
मन मोलैं है, बागाँमें
मोर सुहावणो बोलैं है ॥ २ ॥
आभा माहीं बिजली चमकै
जलधर गहरो गाजै है,
रितु राजै है, स्यामकी
सुंदर मुरली बाजै है ॥ ३ ॥
(रसिक) बिहारीजी रो भीज्यो पीतांबर
प्यारीजी री चूनर सारी है,
सुखकारी है, कुंजाँ कुंजाँ
झूल रह्या पिय प्यारी है ॥ ४ ॥

(२१०) राग छाया-ताल चर्चरी

उड़ि गुलाल धूँधर भई, तनि रह्यौ लाल बितान ।
चौरी चारु निकुंजमें, ब्याह फाग सुखदान ॥
फूलनके सिर सेहरा, फाग रंग रँगे बेस ।
भाँवरहीमें दौड़ते, लै गति सुलभ सुदेस ॥
भीज्यो केसर रंगसूँ, लगे अरुन पट पीत ।
डालै चाँचा चौकमें, गहि बहियाँ दोउ मीत ॥
रच्यो रँगीली रैनमें, होरीके बिच ब्याह ।
बनी बिहारन रसमयी, रसिकबिहारी नाह ॥

सौदा

(२११) राग केदारा-ताल तिताला

मैं अपनो मनभावन लीनों ।
इन लोगनको कहा कीनोंमन दै मोल लियोरी सजनी ।
रत्न अमोलक नंददुलारो नवल लाल रंग भीनों ॥
कहा भयो सबके मुख मोरे मैं पायो पीव प्रबीनों ।
रसिकबिहारी प्यारो प्रीतम सिर बिधना लिख दीनों ॥

प्रतापबालाजी

रूप

(२१२) राग पीलू-ताल कहरवा

वारी थारा मुखड़ा री श्याम सुजान ।
मंद मंद मुख हास बिराजै,
कोटिक काम लजान ।
अनियारी अँखियाँ रस भीनी,
बाँकी भौंह कमान ॥
दाड़िम दसन अधर अरुणारे,
बचन सुधा सुखखान ।
जामसुता प्रभुसों कर जोरे,
मेरे जीवन-प्रान ॥

(२१३) राग कल्याण-ताल रूपक

मो मन परी है यह बान ॥
चतुरभुजको चरण परिहरि,
ना चहूँ कछु आन ।

कमल नैन बिसाल सुंदर,
मंद मुख मुसकान ॥
सुभग मुकुट सुहावनों सिर,
लसे कुंडल कान ।
प्रगट भाल बिसाल राजत,
भौंह मनहुँ कमान ॥
अंग अंग अनंगकी छबि,
पीत पट पहिरान ।
कृष्णरूप अनूपको मैं,
धरूँ निसिदिन ध्यान ॥
सदा सुमिरूँ रूप पल पल,
कला कोटि निदान ।
जामसुता परतापके भुज,
चार जीवन-प्रान ॥

लीला

(२१४) राग मल्हार-ताल तिताला

चतुरभुज झूलत श्याम हिंडोरे ।

कंचन खंभ लगे मणिमानिक,
रेसमकी रँग डोरें ॥
उमड़ि घुमड़ि घन बरसत चहुँदिसि,
नदियाँ लेत हिलोरें ।
हरि हरि भूमि लता लपटाई,
बोलत कोकिल मोरें ॥
बाजत बीन पखावज बंसी,
गान होत चहुँ ओरें ।
जामसुता छबि निरखि अनोखी,
वारूँ काम किरोरें ॥

सिखावन

(२१५) राग बिलावल-ताल तिताला

भजु मन नंदनँदन गिरधारी ॥

सुख-सागर करुणाको आगर, भक्तबछल बनवारी ।
मीरा करमा कुबरी सबरी, तारी गौतम नारी ॥
बेद पुराननमें जस गायो, ध्याये होवत प्यारी ।
जामसुताको श्याम चतुरभुज,ले जा खबर हमारी ॥

प्रेम

(२१६) राग पीलू-ताल कहरवा

लगन म्हारी लागी चतुरभुज राम ॥

श्याम सनेही जीवन येही, औरनसे क्या काम ।
नैन निहारूँ पल न बिसारूँ,सुमिरूँ निसदिन श्याम॥
हरि सुमिरनते सब दुख जावे, मन पावे बिसराम ।
तन मन धन न्योछावर कीजै, कहत दुलारी जाम ॥

(२१७) राग बागेश्री-ताल कहरवा

प्रीतम हमारो प्यारो श्याम गिरधारी है।
मोहन अनाथ-नाथ, संतनके डोलें साथ,
बेद गुण गावे गाथ, गोकुल बिहारी है॥
कमल बिसाल नैन, निपट रसीले बैन,
दीननको सुख दैन, चार भुजा धारी है॥
केशव कृपानिधान, वाही सों हमारो ध्यान,
तन मन वारूँ प्रान, जीवन मुरारी है॥
सुमिरूँ मैं साँझ भोर, बार बार हाथ जोर,
कहत प्रताप कौर, जामकी दुलारी है॥

युगलप्रियाजी

गुरु-महिमा

(२१८) राग ऐमन कल्याण–ताल तिताला

श्री गुरुदेव भरोसो साँचौ ।
अष्टजाम गुरु-ध्यान हिये धरु,
मारो काम क्रोध रिपु पाँचौ ॥
तन मन धन सर्बस लै अरपौ,
श्रीगुरु-कृपा भक्ति रँग राँचौ ।
जुगलप्रिया श्रीगुरु गोबिंदको,
निमिष न भूल लखे सब काँचौ ॥

साधु-महिमा

(२१९) राग देसी–ताल तिताला

साधुनकी जूँठन नित लहिये ।
सुमिरत नाम हियेमें रहिये ॥

प्रेम करो अब हरिजन ही सों,
औरनको संग भूलि न चहिये ॥
इनके दरस परस सुख पैयत,
भगवत रहस सार त्यों गहिये ॥
जुगलप्रिया चरनोदक लै मुख,
जनम जनमके कलमष दहिये ॥

नाम

(२२०) राग रामकली-ताल तिताला

माई मोकों जुगलनाम निधि भाई ।
सुख-संपदा जगतकी झूठी,
आई संग न जाई ॥
लोभीको धन काम न आवै,
अंतकाल दुखदाई ।
जो जोरै धन अधम काम तें,
सर्बस चलै नसाई ॥

कुलके धरम कहा लै कीजै,
भक्ति न मनमें आई ।
जुगलप्रिया सब तजौ भजो हरि,
चरनकमल मन लाई ॥

रूप

(२२१) राग बहार-ताल चर्चरी

सुभग सिंहासन रघुराज राम ।
सिर पै सुभ पाग लसत हरित मनि सुझलमलत,
मुकता जुत कुंडल कपोलनि ललाम ॥
रही है प्रभा फैलि गैलि गैलि अंबर महल,
प्रेमभरी साजैं ताल गति बाद्य बाम ॥
चकित होय निरखत जब, वारति हों सरबस तब,
भयो कंप स्वेद सखी बाढ्यो तन काम ॥
जुगलप्रिया द्रगनि लसी, मूरत मन माहिं बसी,
मुँदरी पै देख्यो जब लिख्यो राम-नाम ॥

(२२२) राग नट मल्हार-ताल तिताला

नैन सलौने खंजन मीन ।
चंचल तारे अति अनियारे,
मतवारे रसलीन ॥
सेत स्याम रतनारे बाँके,
कजरारे रँग भीन ।
रेसम डोरे ललित लजीले,
ढीले प्रेम अधीन ॥
अलसौहैं तिरसौहैं मोहैं,
नागरि नारि नवीन ।
जुगलप्रिया चितवनिमें घायल,
होवै छिन छिन छीन ॥

(२२३) राग अडाना-ताल तिताला

मिलन अनूठी प्यारे, तिहारी ।
कहनि अनूठी करनि अनूठी,
रहनि अनूठी पै बलिहारी ।

चलनि अनूठी मुरनि अनूठी,
झुकनि अनूठी लागत प्यारी ॥
जो समुझौ तो सबहि अनूठी,
चितवनि हँसनि मधुर बसकारी ।
जुगलप्रिया पिय परम अनूठे,
तुम सम हौ तुम कुंजबिहारी ॥

लीला

(२२४) राग भूपाली-ताल तिताला

बाँकी तेरी चाल सुचितवनि बाँकी ।
जबहीं आवत जिहि मारग हो,
झुमक झुमक झुकि झाँकी ॥
छिप छिप जात न आवत सन्मुख,
लखि लीनी छबि छाकी ।
जुगलप्रिया तेरे छल-बल तें,
हौं सब ही बिधि थाकी ॥

(२२५) राग हिंडोल–ताल दीपचंदी

बीर अबीर न डारौ ।
अँखियाँ रूप रंग रस छाकीं,
इनकी ओर निहारौ ॥
अंतर होत जो अवलोकन कों,
हितकी बात बिचारौ ।
जुगलप्रिया मन जीवनजीकौ,
जा पट ओट उचारौ ॥

(२२६) राग गोंड मल्हार–ताल तिताला

माई उमड़ि घुमड़ि घन आये ।
निसि अँधियारी झुकी सावनकी न्यारी,
चली री जाति दोउ चरन दबाये ॥
चपला चमकाई चख रहे चकराई,
बूँदन झर लाई पीउ भींजत पाये ।
जुगलपियारी प्रीति रीति कछु न्यारी,
रोकि रहीं सब नारी पिया कंठ लगाये ॥

(२२७) राग सावनी कल्याण-ताल तिताला

ब्रजमंडल अमरत बरसै री ।
जसुदा नंद गोप गोपिनको,
सुख सुहाग उमंग सरसै री ॥
बाढ़ी लहर अंग अंगनमें,
जमुना तीर नीर उछरै री ।
बरसत कुसुम देव अंबरतें,
सुरतिय दरसन हित तरसै री ॥
कदली बंदनवार बँधावैं,
तोरन धुज सँथिया दरसै री ।
हरद दूब दधि रोचन साजैं,
मंगल कलस देखि हरसै री ॥
नाचैं गावैं रंग बढ़ावैं,
जो जाके मनमें भावै री ।
सुभ सहनाई बजत रात-दिन,
चहुँदिसि आनँदघन छावै री ॥

ढाढ़ी ढाढ़िन नाचि रिझावै,
जो चाहैगो सो पावै री।
पलना ललना झूल रहे हैं,
जसुदा मंगल गुन गावै री॥
करैं निछावर तन मन सरबस,
जो नँदनंदनको जोवै री।
जुगलप्रिया यह नंद महोत्सव,
दिन प्रति वा ब्रजमें होवै री॥

श्रीराधा-रूप

(२२८) राग तिलंग-ताल रूपक

राधा-चरनकी हूँ सरन।
छत्र चक्र सुपद्म राजत,
सुफल मनसा करन॥
ऊर्ध्वरेखा जव धुजा दुति,
सकल शोभा धरन।

बामपद गद शक्ति, कुंडल,
मीन, सुबरन बरन ॥
अष्टकोन सुबेदिका,
रथ प्रेम आनँद भरन ।
कमलपदके आसरे नित,
रहत राधारमन ॥
काम दुख संताप भंजन,
बिरह-सागर तरन ।
कलित कोमल सुभग सीतल,
हरत जियकी जरन ॥
जयति जय नव-नागरी-पद,
सकल भव भय हरन ।
जुगलप्यारी नैन निरमल,
होत लख नख किरन ॥

श्रीराधा-प्रार्थना

(२२९) राग धनाश्री-ताल चौताला

जय राधे, श्रीकुंज बिहारिनि,
बेगहि श्रीब्रजबास दीजिये ।
बेली बिटप जमुनजल औ रज,
संत संग रँग भीजिये ॥
बहु दुख सह्यो, सहौं अब कबलौं,
अभय सबनि सों कीजिये ।
सरनागतकी लाज आपको,
कृपा करो तो जीजिये ॥
जो कछु चूक परी है अबलौं,
सो सब छमा करीजिये ।
जुगलप्रिया अनुचरी आपकी,
बिनय स्रवन सुनि लीजिये ॥

प्रार्थना

(२३०) राग हमीर--ताल तिताला

नाथ अनाथनकी सब जानै ॥
ठाढ़ी द्वार पुकार करति हौं,
स्रवन सुनत नहिं कहा रिसानै ।
की बहु खोट जानि जिय मेरी,
की कछु स्वारथ हित अरगानै ॥
दीनबंधु मनसाके दाता,
गुन औगुन कैधौं मन आनै ।
आप एक हम पतित अनेकन,
यही देखि का मन सकुचानै ॥
झूठौं अपनो नाम धरायो,
समझ रहे हैं हमहि सयानै ।
तजो टेक मनमोहन मेरे,
जुगलप्रिया दीजै रस दानै ॥

प्रेम

(२३१) राग हंसकंकनी-ताल तिताला

प्रीतम रूप दिखाय लुभावै।
यातें जियरा अति अकुलावै ॥

जो कीजत सो तौ भल कीजत,
अब काहे तरसावै ॥
सीखी कहाँ निठुरता एती,
दीपक पीर न लावै ॥
गिरि गिरि मरत पतंग जोतिमें,
ऐसेहु खेल सुहावै ॥
सुन लीजे बेदरद मोहना,
जिनि अब मोहि सतावै ॥
हमरी हाय बुरी या जगमें,
जिन बिरहाग जरावै ॥
जुगलप्रिया मिलिबो अनमिलिबो,
एकहि भाँति लखावै ॥

(२३२) राग टंकरा-ताल तिताला

रूप किरिकिरी परी नैनमें,
जियरा अति घबराय हो ।
कौन उपाय करूँ हौं आली,
जानति जो तौ बताय हो ॥
मनको तौ कोई समुझत नाहीं,
कहे कौन पतयाय हो ।
जुगलप्रिया देखे नहिं सूझे,
परी बिपनिमें हाय हो ॥

(२३३) राग मेघरंजनी-ताल झप

स्याम स्वरूप बस्यो हियमें,
फिर और नहीं जग भावै री ।
कहा कहूँ को मानै मेरी,
सिर बीती सो जानै री ॥
रसना रस ना सब रस फीके,
द्रगनि न और रंग लागै री ।

स्रवननि दूजी कथा न भावै,
सुरत सदा पियकी जागै री ॥
बढ़्यो बिरह अनुराग अनोखो,
लगन लगी मन नहिं लागै री ।
जुगलप्रियाके रोम रोम तें,
स्याम ध्यान नहिं पल त्यागै री ॥

बिरह

(२३४) राग जोगिया–ताल चर्चरी

कोई दुख जानै नहिं अपनो ।
निज सुख होय गयो सपनो ॥
मन हरि लीन्हों नैन-सैनसों,
बिरह-ताप तन तपनौ ॥
मिलि बिछुरी जोगिन बनि डोलूँ,
रूप ध्यान गुन जपनौ ॥
जुगलप्रिया जग जीवन धिक अस,
काल ब्याल भय कँपनौ ॥

(२३५) राग सावेरी-ताल इकताला

नयननि नींद हिरानी,
बोली कोयल बागमें ।
श्रवन सुनत बरछी-सी लागी,
कहा बताऊँ जागमें ॥
व्याकुल है सुध बुध सब भूली,
हरी बिरहकी आगमें ।
जुगलप्रिया हरि सुधहू न लीन्हीं,
कहा लिखी या भागमें ॥

(२३६) राग गुनकली-ताल चर्चरी

होरी-सी हिय झार बढ़ै री ।
यह बिछुरन मेरे प्रान हरै री ॥
नेह नगरमें धूम मचाई,
फेर फिरावत दै दै फेरी ।
तन मन प्रान छार भये मेरे,
धीरज जियरा नाहिं धरै री ॥

यह ऊधम अब कबलौं सहिये,
मनमानी मो सँग जु करै री।
जुगलप्रिया सरसाय दरस दे,
सीतलता पिय आय भरै री॥

टेक

(२३७) राग दुर्गा-ताल झप

साँवलियाकी चेरी कहों री॥
चाहे मारौ चहै जिवावौ,
जनम जनम नहिं टेक तजौ री।
कर गहि लियौ कहत हौं साँची,
नहिं मानै तौ तेरी सौं री॥
जो त्रिभुवन ऐश्वर्य लुभावै,
तिनका लौं हौं सो समुझौं री।
जुगलप्रिया सुन मेरी सजनी,
प्रगट भई अब नाहिंन चोरी॥

सिखावन

(२३८) राग नट बिलावल-ताल तेवरा

मन तुम मलिनता तजि देहु ।
सरन गहु गोबिंदकी,
अब करत कासों नेहु ॥
कौन अपने आप काके,
परे माया सेहु ।
आज दिन लौं कहा पायो,
कहा पैहो खेहु ॥
बिपिन-बृंदा बास करु जो,
सब सुखनिको गेहु ।
नाम मुखमें ध्यान हियमें,
नैन दरसन लेहु ॥
छाँड़ि कपट कलंक जगमें,
सार साँचौ एहु ।
जुगलप्रिया बन चित्त चातक,
स्याम स्वाती येहु ॥

(२३९) राग हंसधुन-ताल रूपक

दृग, तुम चपलता तजि देहु ।
गुंजरहु चरनारबिन्दनि,
होय मधुप सनेहु ॥
दसहुँ दिसि जित तित फिरहु,
किन सकल जगरस लेहु ।
पै न मिलिहै अमित सुख कहुँ,
जो मिलै या गेहु ॥
गहौ प्रीति प्रतीत दृढ़ ज्यों,
रटत चातक मेहु ।
बनो चारु चकोर पियमुख,
चंद्र छबि रस एहु ॥

(२४०) राग पीलू-ताल कहरवा

पापिनको सँग छाँड़ि जतन कर ।
जिनके बचन बान सम लागत,
सहज मिलन दरसन परसन डर ॥

सुखको लेस कहाँ परमारथ,
बिषय-लीन नित रहत अधम नर ।
जुगलप्रिया जिनि बिमुख मिलै अब,
रहूँ नर्कमें चहै कल्प भर ॥

चेतावनी

(२४१) राग पहाड़ी-ताल कहरवा

यह तन इक दिन होय जु छारा ॥
नाम निशान न रहिहैं रंचहु,
भूल जायगो सब संसारा ।
काल घरी पूरी जब ह्वैहै,
लगै न छिन छाँड़त भ्रम जारा ॥
या माया नटनीके बसमें,
भूलि गयौ सुख सिंधु अपारा ।
जुगलप्रिया अजहूँ किन चेतत,
मिलिहै प्रीतम प्यारा ॥

(२४२) राग माँड़-ताल तिताला

बगुला भक्तन सौं डरिये री ।

इक पग ठाढ़े ध्यान धरत हैं,

दीन मीन लौं किम बचिये री ।

ऊपर तें उज्जल रँग दीखत,

हिये कपट हिंसक लखिये री ॥

इनतें दूरहि रहे भलाई,

निकट गये फंदनि फँसिये री ।

जुगलप्रिया मायावी पूरे,

भूलि न इन सँग पल बसिये री ॥

दीनता

(२४३) राग झँझोटी-ताल चर्चरी

सुनिये नाथ गरीब निवाज ।

आई सरन तुम्हें सब लाज ॥

अधम-उधारन बिरद-सम्हारन,

त्रिभुवनके सिरताज ।

कुंजद्वार हौं खड़ी कबैकी,
त्राहि त्राहि महराज ॥
करुनाकर अब बोलि लीजिये,
करिये बिलम न आज ।
जुगलप्रियाको अभय कीजिये,
यह नहिं कछु बड़ काज ॥

(२४४) राग सोरठ-ताल दादरा

मेरे गति एक आप,
दूजो कोऊ और ना ।
म्रोको तन मलीन,
कर्म अधिकार ना ॥
चपल बुद्धि बरनौ कबि,
होत हिये ज्ञान ना ।
मंद-भाग्य मंद-कर्म,
बनत नाँहिं साधना ॥

त्रिद्या-गुन-हीन दीन,
नैक भक्ति भाव ना।
नेम ध्यान धर्म कछू,
होत ना उपासना॥
गेह फँसी ग्रसो रोग,
एकहू उपाय ना।
करूँ कहा जाऊँ कहाँ,
काहू पं बसाय ना॥
इतने पं द्रोह करत,
तात भ्रात साजना।
जुगलप्रिया तऊँ तुम्हें,
प्यारे पिय लाज ना॥

चाह

(२४५) राग बृंदावनी सारंग-ताल तिताला

बृंदाबन अब जाय रहूँगी,
बिपति न सपनेहु जहाँ लहूँगी।

जो भावै सो करौ सबै मिलि,

मैं तो दृढ़ हरिचरन गहूँगी ॥

प्राननाथ प्रीतमके ढिंग रहि,

मनमाने बहु सुखनि पगूँगी ।

भली भई बन गई बात यह,

अब जग दारुन दुख न सहूँगी ॥

करिहैं सुरति कबहुँ तो स्वामी,

विषयानलमें अब न दहूँगी ।

जुगलप्रिया सतसंग मधूकरी,

बिमल जमुन जल सदा चहूँगी ॥

(२४६) राग हीम-ताल तिताला

चरन चलौ श्रीबृंदाबन मग,

जहँ मुनि अलि पिक कीर ।

कर तुम करौ करम कृष्णार्पण,

अहंकार तजि धीर ।

मस्तक नवियौ हरिभक्तनकों,
छाँड़ि कपटको चीर ॥
स्रवन सदा सुनियौ हरि-जस-रस,
कथा भागवत हीर ।
नैना तरसि तरसि जल ढरियौ,
पिय मग जाय अधीर ॥
नासा तबलौं स्वाँसा भरियौ,
सुरता रखि पिय तीर ।
रसना चखियौ महा प्रसादै,
तजि बिषया-बिष नीर ॥
सुधि बुधि बढ़े प्रेम चरनन,
ज्यों तृस्ना बढ़े शरीर ।
चित्त चितेरे, लिखियो पियकी,
मूरति हृदय कुटीर ॥
इंद्रिय मन तन भजौ स्यामकों,
बढ़ै बिरहकी पीर ।

जुगलप्रिया आसा जिय धरियो,
मिलिहैं श्रीबलवीर ॥

(२४७) राग पीलू-ताल कहरवा

ब्रजलीला रस भावै अब तौ,
श्रीगिरिराज अंकमें रहिये ।
करिये बिनय निहोरि भाँति बहु,
स्यामरूप मृदु माधुरि लहिये ॥
चलिये संग रसिक भक्तनके,
प्रेम प्रबाह मगन ह्वै बहिये ।
गाय गुबिंद नाम गुन कीर्तन,
जनम जनमके तहँ दुख दहिये ॥
करिये कालिंदी जल मज्जन,
नित मधूकरी लै निरबहिये ।
जुगलप्रिया प्रीतम भुज भरिकै,
पाइय जो कछु चहिये ॥

(२४८) राग पीलू-ताल कहरवा

आओ प्यारे हृदय-सदनमें,
पल कपाट दै राखूँगी।
जान लिये छल-छंद-फंद सब,
अब न चलै सत्य भाखूँगी॥
करिहै जो कोइ बिघन मिलनमें,
ताके सब कल-बल नाखूँगी।
जुगलप्रिया मनमोहन तुम्हरो,
दृगभरि रूपसुधा चाखूँगी॥

(२४९) राग जैजैवंती-ताल तिताला

मैं पाऊँ कृपा करि मोहिनी।
श्रीकुंज भवनकी सोहिनी॥
मन मानिक मुक्ता लर टूटैं,
बिखरि परैं सो खोजिनी॥

होत प्रभात सुहात न अब कछु,
कहूँ टहल हिय सोधिनी ॥
जुगलप्रिया बड़ भाग मनाऊँ,
चरन चिन्ह रज लोभिनी ॥

व्रज-महिमा

(२५०) राग बहार-ताल तिताला

बृंदावन रस काहि न भावै ।
बिटप बल्लरी हरी हरी त्यों,
गिरिवर जमुना क्यों न सुहावै ॥
खग-मृग-पुंज कुंज-कुंजनिमें,
श्रीराधाबल्लभ गुन गावै ।
पै हिंसक बंचक रंचक यह,
सुख सपनेहू लेस न पावै ॥
धनि ब्रज-रज धनि बृंदावन धनि,
रसिक अनन्य जुगल बपु ध्यावै ।

जुगलप्रिया जीवन ब्रज साँचौ,

नतरु बादि मृगजल कों धावै ॥

श्रीयमुना-प्रार्थना

(२५१) राग देस–ताल कहरवा

जय श्री जमुने कलि-मल-हारिनि ।

करु करुना प्रीतमकी प्यारी,

भँवर तरंग मनोहर धारिनि ॥

पुलिन बेलि कुसुमित सोभित अति,

कंजन चंचरीक गुंजारिनि ।

बिहरत जीव जंतु पसु पंछी,

स्याम रूप रस-रंग-बिहारिनि ॥

जे जन मज्जन करत बिमल जल,

तिनको सब सुख मंगलकारिनि ।

जुगलप्रिया ह्वै कृपालु अब,

दीजे कृष्ण-भक्ति अनपायिनि ॥

मिथिला-धाम

(२५२) राग काफ़ी-ताल तिताला

ज्ञान शुभ कर्मको सुथल मिथिला धाम ।
जनक जोगींद्र राजेंद्र राजत बिदेह ब्रह्म,
सुख अनुभवत निसि दिवस आठौ जाम ॥
भोग रोग मानत हैं, सहज ही बिराग भाग,
शान्ति-रूप कर्म करैं पूरे निहकाम ॥
श्रीमती सुनैना भली सुकृत बेलि फूली-फली,
जनमि श्रीसीय पाये लौने बर राम ॥
जुगलप्रिया सरिता बन बाग तरु तड़ाग राग,
नारी नर सोहै सब अति ललाम ॥

आरती

(२५३) राग जलधर-ताल तिताला

मंगल आरति प्रिया प्रीतमकी ।
मंगल प्रीति रीति दोउनकी ॥
मंगल कान्ति हँसनि दसननकी ।
मंगल मुरली बीना धुनकी ॥

मंगल बनिक त्रिभंगी हरिकी ।
मंगल सेवा सब सहचरिकी ॥
मंगल सिर चंद्रिका मुकुटकी ।
मंगल छबि नैननिमें अटकी ॥
मंगल छटा फबी अँग अँगकी ।
मंगल गौर स्याम रस रँगकी ॥
मंगल अति कटि पियरे पटकी ।
मंगल चितवनि नागर नटकी ॥
मंगल शोभा कमलनैनकी ।
मंगल माधुरि मृदुल बैनकी ॥
मंगल बृंदाबन मग अटकी ।
मंगल क्रीड़न जमुना तटकी ॥
मंगल चरन अरुन तरुवनकी ।
मंगल करनि भक्ति हरि जनकी ॥
मंगल जुगलप्रिया भावनकी ।
मंगल श्रीराधा-जीवनकी ॥

रामप्रियाजी

सिखावन

(२५४) राग प्रभाती-ताल तिताला

तू न तजत सब तोहिं तजेंगे।
जा हित जग-जंजाल उठावत
तोकहँ छाँडि भजेंगे ॥
जाकहँ करत पियार प्राणसम
जो तोहिं प्राण कहेंगे।
सोऊ तोकहँ मरयो जानिकै
देखत देह डरेंगे ॥
देह गेह अरु नेह नाहते
नातो नहिं निबहेंगे।
जा बस है निज जन्म गँवावत
कोउ न संग रहेंगे ॥
कोऊ सुख जम दुख-बिहीन नहिं
नहिं कोउ संग करेंगे।
रामप्रिया बिनु रामललाके
भव-भय कोउ न हरेंगे ॥

किङ्किणी-ध्वनि

(२५५) राग तिलक कामोद-ताल तिताला

जब किंकिनी-धुनि कान परी री ।
लख ललचाय लखनसों लालन
हँसि यह बात कही री ।
मानहु मान महान महादल
कै दुंदुभिकी सान चली री ॥
विश्व-विजय अब कीन्हो चाहत
मम दृढ़ता लखि भाजि चली री ।
रामप्रियाके रामललाको
आजु लली मन छीनि चली री ॥

प्रार्थना

(२५६) राग गौरी-ताल चर्चरी

जय जयति जय रघुवंशभूषण राम राजिवलोचनम् ।
त्रैतापखंडन जगत-मंडन ध्यानगम्य अगोचरम् ॥
अद्वैत अविनाशी अनिन्दित मोक्षप्रद अरिगंजनम् ।
तव शरण भवनिधि-पारदायकअन्यजगतविडम्बनम्

दुख-दीन-दारिदके विदारक दयासिन्धु कृपाकरम् ।
त्वं रामप्रियके राम जीवनमूरि मंगलमंगलम् ॥

बाल्य-भय

(२५७) राग कोसी-ताल कहरवा

जोई जल व्यापक जहानको जननहार,
जाको ध्यान केते जग-जालसों निवटिगो ।
जोई दल्यो दानव दिखायो नरसिंहरूप,
उदित दिगंतसों दुहाई हेत हटिगो ॥
रामप्रिया सोई औध-महलको चित्र देखि,
धाय घबराय मणिखंभ सो लपटिगो ।
जू जू कहिबेको तुतराय आय दू दू कहि,
अतिहिं सकाय माय-अंकसों छपटिगो ॥

रानी रूपकुँवरिजी

महिमा

(२५८) राग श्रीरंजनी-ताल तिताला

श्याम छबिपर मैं वारी वारी ।

देवनमाहीं इंद्र तुमहीं,
हो उडुगग बीच चंद्र उजियारी ।
सामवेद वेदनमें तुमहीं,
हो सुमेरु पर्बतन मझारी ॥
सरितन गंगा बृक्षन पीपर,
जल-आशयमें सागर पारी ।
देव-ऋषिनमें नारद स्वामी,
कपिल मुनी सिद्धन सुखकारी ॥
उच्चैश्रवा हयनमें तुमहीं,
गज ऐरावत तुमहिं मुरारी ।
गौवन कामधेनु, सर्पनमें
बासुकि, वज्र आप हथियारी ॥

मृगन मृगेंद्र गरुड़ पक्षिनमें,

तुमहीं मीन सदा जलचारी ।

रूपकुँवरि प्रभु छबिके ऊपर,

तन मन धन सब है बलिहारी ॥

(२५९) राग टोडी–ताल तिताला

राखत आये लाज शरणकी ।

राखी मीरा नारि अहिल्या

लाज बिभीषन चरन गिरनकी ।

ध्रुव प्रह्लाद बिदुर सुधि राखी,

द्रुपदसुताके चीरहरणकी ॥१॥

गोपी ग्वाल बाल बृज-बनितन,

राखी सुधि गिरि नखन धरनकी ।

सोई लाज प्रभु रखने अइहैं,

रूपकुँवरिके सब गृहजनकी ॥२॥

रूप

(२६०) राग ललित-ताल तिताला

देखो री छबि नंदसुवनकी ।

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल,
मुक्त माल गर मनु किरननकी
देखो री छबि० ॥

कर कंकन कंचनके शोभित,
उर भ्रगुलता नाथ त्रिभुवनकी
देखो री छबि० ॥

तन पहिरे केसरिया बागो
अजब लपेटन पीतवसनकी
देखो री छबि० ॥

रूपकुँवरि धुनि सुनि नूपुरकी,
छबि निरखति श्याम पगनकी
देखो री छबि० ॥

(२६१) राग हमीर-ताल तिताला

बस गये नैनन माँहि बिहारी ।
देखी जबसे श्यामलि मूरति
टरत न छबि दृग टारी ।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल
बाम अंग श्री प्यारी ॥१॥
प्रेम भक्ति दीजै मुहि स्वामी
अपनी ओर निहारी ।
रूपकुँवरि रानीके साधहु
कारज सकल मुरारी ॥२॥

श्रीराधा-रूप

(२६२) राग श्री-ताल तिताला

मूरति मुहनियाँ राधिकाजूकी ।
सुंदर बसन अंग सब राजति
बिहँसति बदन मृदुल मुसकनियाँ ॥
शीस चंद्रिका बीज धूल युत
कर्णफूल बेसर लटकनियाँ ।

कंठ कंठ श्रीमुक्तन माला
हार जटित नव लाल रतनियाँ ॥
बाजू बाजू बटा अजूबा
लटकन पहुँची रतन धकनियाँ ।
छुद्रघंटिका राजत मणिमय
कर किंकण बाजत झनकनियाँ ॥
अनवट बिछिया आदि दसाँगुर
पट युग पायजेब पैजनियाँ ।
रूपकुँवरि महरानी चेरी
मातु भक्ति दे अचल अपनियाँ ॥

सिखावन

(२६३) राग देसी-ताल कहरवा

भज मन राधा गोपाल छोड़ो सब झगरौ ।
सुत पति लखि तात मात सँगमें न कोऊ जात
झूँठौ संसार जाल मायाको बगरौ ।
मिथ्या धन धाम ग्राम झूँठौ है जग तमाम
नाहक ममतामें फँसो चरणनमें लगरौ ॥

यमपुर जब मार परे कोउ न सहाय करे
तन मन धन गेह नेह भूल जात सगरौ ।
चोला यह चामको निकाम रामनाम हीन
हंसा उड़ि जात जबै यमके सँग झगरौ ॥
गर्भमें कबूल करी भक्तिहेतु देह धरी
भूल गये कौल फिरत भटकत जग सगरौ ।
दीनबंधु हे मुरारि ! सुनिये मेरी पुकार
रूपकुँवरि कृष्ण हेतु अर्पण तन हमरौ ॥

(२६४) राग रामकली-ताल तिताला

रसना क्यों न राम रस पीती ।
षट-रस भोजन पान करेगी
फिर रीती की रीती ॥
अजहूँ छोड़ कुबान आपनी
जो बीती सो बीती ।
या दिनकी तू सुधि बिसराई
जा दिन बात कहीती ॥

जब यमराज द्वार आ अड़िहैं
खुलिहै तब करतूत खलीती ।
रूपकुँवरिको मान सिखावन
भगवत सन कर प्रीती ॥

(२६५) राग मालश्री-ताल तिताला

अब मन कृष्ण कृष्ण कहि लीजे ।
कृष्ण कृष्ण कहि कहिके जगमें
साधु समागम कीजे ॥
कृष्ण-नामकी माला लैके
कृष्ण-नाम चित दीजे ।
कृष्ण-नाम अमृत रस रसना
तृषावंत हो पीजे ॥
कृष्ण-नाम है सार जगतमें
कृष्ण हेतु तन छीजे ।
रूपकुँवरि धरि ध्यान कृष्णको
कृष्ण कृष्ण कहि लीजे ॥

चेतावनी

(२६६) राग पीलू-ताल तिताला

भजन बिन है चोला बेकाम ।
मल अरु मूत्र भरो नर सब तन
है निष्फल यह चाम ॥
बिन हरि भजन पवित्र न ह्वैहै
धोवौ आठौ याम ।
काया छोड़ हंस उड़ि जैहै
पड़ो रहै धन धाम ॥
अपनो सुत मुख लू धर देहै
सोच लेहु परिणाम ।
रूपकुँवरि सब छोड़ बसहु ब्रज
भजिये श्यामा श्याम ॥

दैन्य

(२६७) राग कामोद-ताल तिताला

हमारे प्रभु कब मिलिहैं घनश्याम ।
तुम बिन ब्याकुल फिरत चहूँ दिशि
मन न लहै बिश्राम ॥ हमारे प्रभु० ॥

दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदिया

कल न परे बसु याम ॥ हमारे प्रभु० ॥

जैसे मिले प्रभु विप्र सुदामहिं

दीन्हें कंचन धाम ॥ हमारे प्रभु० ॥

रूपकुँवरि रानी सरनागत

पूरन कीजे काम ॥ हमारे प्रभु० ॥

दीनता

(२६८) राग विभास-ताल तिताला

हमपर कब कृपालु हरि हुइहौ ।

मैं अधमिन तुम अधम-उधारन

कैसे प्रन न निबइहौ ।

कोटिन खल प्रभु तुमने तारे

दीन जान का मोहि लजइहौ ॥ १ ॥

मैं सरनागत नाथ तिहारी

दास जान किन आस पुजइहौ ।

का कहिहै जग लोकनाथ जब
रूपकुँवरिकी सुध बिसरइहौ ॥२॥

प्रार्थना

(२६९) राग खम्माच-ताल तिताला

करहु प्रभु भवसागरसे पार ।
कृपा करहु तो पार होत हौं
नहिं बूड़ति मँझधार ।
गहिरो अगम अथाह थाह नहिं
लीजै नाथ उबार ॥
मैं हौं अधम अनेक जन्मकी
तुम प्रभु अधम उधार ।
रूपकुँवरि बिन नाम श्यामके
नहिं जगमें निस्तार ॥

(२७०) राग देस-ताल तिताला

प्रभुजी ! यह मन मूढ़ न माने ।
काम क्रोध मद लोभ जेवरी
ताहि बाँधि कर ताने ।

सब बिधि नाथ याहि समुझायौ
नेक न रहत ठिकाने ॥ १ ॥
अधम निलज्ज लाज नहिं याको
जो चाहे सोइ ठाने ।
सत्य असत्य धर्म अरु अधरम
नेक न यह शठ जाने ॥ २ ॥
करि हारी सब यतन नाथ मैं
नेक न याहि लजाने ।
दीन जानि प्रभु रूपकुँवरिको
सब बिधि नाथ निभाने ॥ ३ ॥

(२७१) राग सोरठ-ताल तिताला

बिहारी जू है तुम लौ मेरी दौर ।
दीननको प्रभु राखत आये
हौ त्रिभुवन सिरमौर ।
जो जन सरन भये तव स्वामी
तिनहिं दियो शुभ ठौर ॥ १ ॥

मीरा आदि द्रौपदी सौरी
सबके राखे तौर ।
रानी रूपकुँवरि सरनागत
करिये प्रभु अब गौर ॥ २ ॥

कीर्तन

(२७२) राग धारा-ताल दादरा

जय जय श्रीकृष्णचंद्र नंदके दुलारे ।
व्यास ऋषिन कपिलदेव पच्छ कच्छ हंस सेव ।
नर हरि बामन सुमेत्र परशु धरनहारे ॥
कलकि बौद्ध पृथु सुधीर ध्रुव हरि रघुबंस बीर ।
धन्वन्तरि हरण पीर हयग्रीव प्यारे ॥
बद्रीपति दत्तात्रय मन्वन्तर टारन भय ।
यज्ञेश्वर शूकर जय सनकादिक उचारे ॥
रूपकुँवरि चतुरबिंस नाम जपति बदति बंस ।
भक्ति मुक्ति लहै हंस अधमनको तारे ॥

(२७३) राग धारा-ताल तिताला

जय जय मोहन मदनमुरारी।

जय जय जय बृंदाबनबासी

आनँद मंगलकारी।

जय जय रंगनाथ श्रीस्वामी

जय प्रभु कलिमलहारी॥

जय जय कहत सकल सुर हरषित

जय जय कुंजबिहारी।

जय जय जय मधुबन बंशीबट

जय जय करि गिरधारी॥

जय जय दीनबंधु करुणाकर

जय जय गर्बप्रहारी।

रूपकुँवरि बिनवति कर जोरे

हौं प्रभु सरन तिहारी॥

प्रभाती

(२७४) राग प्रभाती-ताल दादरा

जागहु ब्रजराज लाल मोर मुकुटवारे ।
पक्षी ध्वनि करहिं शोर अरुण वरुण भानु भोर
नवल कमल फूल रहे भौंरा गुनजारे ॥
भक्तनके सुने बयन जागे करुणाके अयन
पूजी मन कामधेनु पृथ्वी पगु धारे ।
करके सुस्नान ध्यान पूजन पूरण विधान
बिप्रनको दियौ दान नंदके दुलारे ॥
ग्वाल बाल टेर टेर दुहरी लीन्ही नवेर
बछरा दीन्हें उबेर दूध दुहत सारे ।
करके भोजन गुपाल गैयन सँग भये ग्वाल
बंशीबट तीर गये यमुना किनारे ॥
मुरली कर लकुट हाथ बिहरत गोपिनके साथ
नटवर सब बेष किये यशुमतिके पियारे ।

हौं तो मैं शरण नाथ त्रिनवति धरि चरण माथ
रूपकुँवरि दरश हेतु शरण है तिहारे ॥

चाह

(२७५) राग पीलू-ताल तिताला

लागो कृष्ण-चरण मन मेरौ ।
ध्रुव प्रहलाद दास कर लीन्हें ऐसहि मौपर हेरौ ।
गजकी टेर सुनतही तुमने तुरतहि जाइ उबेरौ ॥ १॥
भवसागरसे पार उतारहु नेक करौ नहिं देरौ ।
रूपकुँवरि रानीको दीजे प्रभु पद-प्रेम घनेरौ ॥२॥

(२७६) राग पूरिया कल्याण-ताल तिताला

नाथ मुहिं कीजे ब्रजकी मोर ।
निश दिन तेरो नृत्य करौंगी
ब्रजकी खोरन खोर ॥
श्याम घटा सम घात निरखिके
कूकोंगी चहुँ ओर ।

मोर मुकुट माथेके काजें
दैहों पंखा टोर ॥
ब्रजबासिन सँग रहस करूँगी
नचिहौं पंख मरोर ।
रूपकुँवरि रानी सरनागत
जय जय जुगलकिशोर ॥

(२७७) राग सारंग-ताल तिताला

हे हरि ब्रजबासिन मुहिं कीजे ।
चहि ब्रज ग्वाल बाल गोपिनके
चह ब्रज बनचर कीजे ।
चह ब्रज धेनु चाहि ब्रज बछरा
चह ब्रज तृणचर कीजे ॥
चह ब्रज लता चहै ब्रज सरिता
चह ब्रज जलचर कीजे ।
चह ब्रज कीच नीच ऊँचन घर
चह ब्रज फणचर कीजे ॥

चह ब्रज बाट घाट पनघट रज
चह ब्रज थलचर कीजे ।
चह ब्रज भूप-भवनकी किंकरि
चह ब्रज घुणचर कीजे ॥
चह ब्रज चकइ चकोर मोर कर
चह ब्रज नभचर कीजे ।
रूपकुँवरि दासी दासिनकी
चह अनुचरी करीजे ॥

प्रकीर्ण

(२७८) राग शुद्ध कल्याण-ताल तिताला

प्रभुके दो ही दास हैं साँचे ।
नेमी होय चाहि हो प्रेमी होय न मनके काँचे ।
प्रथम भक्ति प्रेमीजन पावत दूजे नेमी राँचे ॥
प्रेम भाव लखि ब्रजगोपिनको तिनके सँग प्रभु नाँचे ।
रूपकुँवरि यह सत्य जान लो हरि साँचेको साँचे ॥

परिशिष्ट

कठिन शब्दोंके अर्थ

मीरा

अ

अखोटा = सुरलिया, कानका गहना

अगन = अग्नि

अगम = परमात्मा

अटरिया = अटारीपर

अड़ो = अटक गयी

अणहद = अनहद

अपणो = अपना

अपरबल = अपार

अबळा = अबला

अबोलणा = बिना बोले ही

अभागण = अभागिन

अम्रित = अमृत

अरज करूँ छूँ = अर्ज करती हूँ

अबेरि = देर

असनान = स्नान

अँसुवन-जळ = आँसुओंके जलसे

आ

आओनी = आइये न

आकुळ व्याकुळ = आकुल-व्याकुल

आँकुस = अंकुश

आखड़ी = टूट गयी

आखो = सब, समूचे

आखडियाँ = आँखोंमें

आँगणे = आँगनमें

आँगळियाँ= अंगुलियाँ
आँटड़ियाँ= आपत्ति, आँट
आणद = आनन्द
आँबाकी डाळ } = आमकी डालीपर
आभूखण= आभूषण, गहने
आली = सखी
आळस = आलस्य
आरत = आर्त्त, दुखी
आवड़े = रहा जाता, चैन पड़ती
आवण लागी = आने लगी
आवागमन-निवार = { जन्ममरण मिटानेवाले, मुक्तिदाता
आसड़ियाँ= आशा
आसरो = आश्रय
आसी = आवेंगे
आसोजाँ = आश्विनमें

इ

इण = इस
इम्रत = अमृत
इमरित = अमृत
इमिरत = अमृत
इसड़ा = ऐसे

उ

उकळाणी = व्याकुल हो रही है
उकळावे = अकुलाता है
उघड़ आया= खुल गये
उघाड़ो = खोलो
उणारथ = लालसा
उद्र = उदर, पेट
उबटण = उबटन
उमँग्यो = उमंग आ गयी उमड़ उठा
उमावो = उमङ्ग

ऊ

ऊजळो = सफेद
ऊँडी = गहरी

ऊपजी = पैदा हुई
ऊभी = खड़ी

ऐ

ऐन = पूरी-पूरी

ओ

ओखद = दवा
ओळगिया = प्रवासी प्रियतम
ओळूँ = याद

औ

औगण = अवगुण
औगुणवाळी=अवगुणवाली
औरां सूँ = औरोंसे

क

कछुवै = कुछ भी
कजरा = काजल
कटितट = कमरमें
कदकी खड़ी=कबसे खड़ी हूँ
कद होसी = कब होगा
कदे = कभी
कमोदणि = कुमुदिनी
क्यूँ = क्यों
करक = हड्डियाँ
कर जोड़्याँ = हाथ जोड़े
करवत-काशी = काशी करौत लेना
करवत = करौत, आरा
कळ = कल, चैन
कळी = कली
कळेजे = कलेजे
कलेजो = कलेजा
कँवल = कमल
कसक = पीड़ा
कथीर = राँगा
कागा = रे कौवा

काच = काँच, शीशा
काढो = निकालो
काण = कानि, मर्यादा
कातीमें = कार्तिकमें
कानूड़ो = कान्ह, श्रीकृष्ण
कामदाराँसूँ= कामदारोंसे, दीवानोंसे
कारणैं = लिये, कारणसे
काँकण = कंगन
काल ब्याल सूँ = कालरूपी सर्पसे
कालर = कड़ी जमीन
काळी-पीळी=काली-पीली
कालो र = काला
कासूँ = किससे, कैसे
काहे कूँ = किसलिये
किठे = कहाँ
किण कारण= किस कारण

किणरे = किसके
कित = कहाँ
किंवड़िया = किंवाड़
कियाँ = करनेसे
केळयाँ करै= क्रीडा करते हैं
कीरत = कीर्त्ति, गुणगान
कुटम-कबीलो = कुटुम्ब-परिवार
कुबधको भाँडो = कुबुद्धिका पात्र
कुरळहे=करुण शब्द करना
कुरळीजै= करुणाभरे शब्द करती है
कुळकी = कुलकी
कुळ डार= कुलकी मर्यादा तोड़कर
कुळरा = कुलके
कुसलात= कुशल
कुण जाव= कौन जाय

कूण = कौन
केरी = की
कोटिक = करोड़ों
कौल = प्रतिज्ञा

ख

खत = दस्तावेज़
खरी = सच्ची
खाना-जाद = जन्मसे ही पाली हुई
खिण-खिण = क्षण-क्षण
खीज = खीझ, डाह
खेवटिया = केवट, नाव खेनेवाला
खोल्या = खोले
खोल्यो = खोला

ग

गणिकात्रिक = वेश्या-नृत्य
गमाया = खो दिया
गळकंथा = गलेमें गुदड़ी
गळ-गळ = गल-गलकर
गळी = रास्ते
गळे = गलेमें
गवण = जाना, गमन
गहो = पकड़िये
गास्यॉं = गावेंगी
गासूँ = गाऊँगी
गिण-गिण = गिन-गिनकर
गिणत नहिं आवे = अगणित, असंख्य
गिणता-गिणता = गिनते-गिनते
गीतारो ग्यान = गीताका ज्ञान
गुणरा सागर = गुणके समुद्र
गुणवंत = गुणवान्
गुँवार = गँवार
गूदड़ी = गुदड़ी, कन्था
गेरया छे बिगोय = तोड़ डाले

गैल भुलावना = राह भूल गया

गोतम-घरण = गौतमपत्नी अहल्या

गौरकृष्ण = श्रीचैतन्य महाप्रभु

घ

घणा छे = बहुत है

घणेरी = बहुत

घणेरो = बहुत

घणो = बहुत

घरना = घरके

घाघरो = लहँगा

घाणि = घानी, कोल्हू

घुरास्याँ = बजावेंगी

घूँघरवाला = घूँघरवाले

च

चमंकै = चमकती है

च्यार = चार

चरणकँवल = चरणकमल

चरणाँ चित लावना = चरणोंमें चित लगाना चाहिये

चरणाम्रित-को नेम = चरणामृत-का नियम

चलास्याँ = चलावेंगी

चल्यो जा = चला जा

चाकर रहसूँ = नौकर रहूँगी

चाँच = चोंच

चाबी = चबा गये

चारे जाम रे = चारों पहर

चालाँ = चलें

चात्रग = चातक, पपीहा

चितवौ = देखो

चीर = वस्त्र, साड़ी

चूड़लो = सुहागकी चूड़ी

चूड़ो = चूड़ियाँ

चेरी = दासी

चौसरकी बाजी = चौसर या चौपड़का खेल

चौकी = पहरा

छ

छतियाँ = छाती

छतीसूँ = छतीसों

छाँ = हैं

छाने = छिपकर

छीजिया = घट गया

छीजै हो = क्षय हो रहा है, घट रहा है

छिमता = क्षमा

छीलरिये = छीलर तालावमें

छैल = छैला, सुन्दर युवक

ज

जक न पड़त = चैन नहीं पड़ती

जगपति-राय = जगत्पति स्वामी

जग सूँ = जगत्से

जग्य = यज्ञ

जनममरणरा = जन्म-मरणके

जमका फदा = यमराजकी फाँसी

ज्याँ देसा = जिस देशमें

ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार = जैसे ठीक समझो वैसे ही तारो

ज्यूँ त्यूँ = जैसे-तैसे

जद = जब

जाऊँनी = नहीं जाऊँगी

जाणती = जानती

जाण्यो नाहीं = नहीं जाना

जाब = जवाब

जास्याँ = जावेंगी
जावणको= जानेकी
जिवड़ो = जीवन
जीवण होय= जीना हो
जिन टाळा दे जाओ = टाल मत जाना
जिव देय= प्राण दे डालेगी
जुग = युग
जोग = योग, वास्ते
जुगत=ईश्वर-प्राप्तिकी युक्ति
जोगणको =योगिनीका, संन्यासिनीका
जोय = देखना, देखती हूँ
जोऊँ =देखा करती हूँ
जोसीड़ा =ज्योतिषी, पण्डित

झ

झकोळा = थपेड़ा
झणकार = झंकार
झ्याझ = जहाज
झाझ चलास्याँ = जहाज चलावेंगे
झीणो = बारीक, सूक्ष्म
झूटणो = झूटना, कानका एक गहना
झूरताँ = विरहमें व्याकुल होते, शोक करते-करते
झोला खाय= उथल-पुथल होता है

ट

टपरिया = मँढैया, कुटिया

ठ

ठग्योरी = ठगा
ठाढ़ी = खड़ी
ठामू-ठाम= जगह-जगह

ड

डगर बुहारूँ= रास्तेमें झाड़ू लगाऊँ
डगराँ = रास्तेमें

डफ=चङ्ग, राजपूतानेमें होलीके समय बजाया जाता है

डबियामें=डिबियामें

डस्यो =डस गया (साँप काट गया)

डाबरिये=जल भरा छोटा गड्हा

त

त्याग्या =त्याग दिये

त्याँ =वहाँ

तलब =बुलाहट

तरसावै =तरसाते हैं

ताला द्यो न जड़ाय } =चाहे ताले लगा दें

ताळी लागी } =सम्बन्ध हो गया

तिरयो =तर गया

तीर-कमान =धनुष-बाण

तेताइ =उतने ही

तोड्यो जाय =तोड़ा जाता

तोल =मर्म, रहस्य

थ

थाँ =आप

थाँके =आपके

थाँने =आपको

थाँरा देसाँमें=आपके देशमें

थाँरो =आपकी

थाँरी मारी ना मरूँ } =आपकी मारी नहीं मरूँगी

थाँरे =आपके

थारो =आपका

द

दरद =प्रेमव्याधि

दरसण =दर्शन

दरियाव =समुद्र

दाझी =जली हुई

दामण दमके = बिजली चमकती है

दामणि = बिजली

दाय न आवे = पसन्द नहीं आता

दारू = दवा

दासड़ियाँ = दासी

दाळद खोयो = दरिद्रता खो दी

दाँवनकी = दामनकी

दिखणी चीर = मूल्यवान् दक्षिणी साड़ी

दिलकी घुंडी = हृदयकी गाँठ

दिवलो जोयो = दीपक जलाया

दिवानी = पगली

दुखारी = दुखिया

दुरमत = दुर्बुद्धि

दुलड़ी = दो लड़ोंकी माला, एक गहना

दुसमण = शत्रु

दूखण लागे = दुखने लगे

दूसासन = दुःशासन

देसड़लो = देश

देस्यूँ प्राण अकार = प्राण न्योछावर कर दूँगी

दौर = दौड़, पहुँच

दोवड़ो = गलेमें पहननेका एक गहना

ध

धणी = स्वामी, पति

धरण = धरणी, पृथ्वी

धरिया = धारण किये

धरूँ = रक्खूँ

धान = अन्न

धीयड़ी = लड़की

धोवणा = स्नान

न

नखसिखाँ = नखसिखमें
नरहरि = नृसिंह भगवान्
नग्र = नगर
नटै = इन्कार करे
नवा-नवा = नये-नये
न्हालो = आकर देखिये
नातो = नाता, सम्बन्ध
नाभ = नाभि
निकस्या जात = निकले जाते हैं
निकसी हूँ = निकली हूँ
निगुणी = गुणहीन
निपजै = पैदा होती है
निभाग्यो जी = निबाहियेगा
निभायाँ सरेगी = निबाहनी पड़ेगी
निंदरा = नींद
निंद्या = निन्दा
निरभै = निर्भय
निसाण = नगारे
निरधाराँ आधार = निराधारके आधार
निराट = अवलम्बन-हीन, बेसहारे
निवाँण = नीचा खेत, उपजाऊ जमीन
निवारि = निवारणकर, छोड़कर
निहारयाँ = देखे
नीच सदान = सजन कसाई
नींदड़ळी = नींद
नीर = जल
नेरा = नजदीक, समीप
नेवछावरी = न्योछावर
नेहड़ो लगाय = प्रेम लगाकर
नेहरा = स्नेह, प्रेम
नैण = आँख

नैण नीरज=नेत्रकमल
नैणाँ =नैनों, आँखों

प

पंडर =पीले, सफेद
पतीजै =विश्वास करता
पपइया =पपीहा
पपीहड़ा =रे पपीहा
पर घर =पराये घर
परतिग्या=प्रतिज्ञा
परभात =प्रभात, सुबह
परले पार=उस पार, परम पद
परचो दियो =चमत्कार दिखलाया
पळ =पल, पलक
पाज =पुल, मर्यादा
पाट पटम्बरा=रेशमी कपड़े
पाणी =जल
पानाँ ज्यूँ=पत्तोंकी तरह
पाय =चरण, पैर
पाला =सर्दी, ठण्ढ
पावड़ियाँ=पैर
पावणड़ा =पाहुने
पावणारी =पाहुने
पाँव उभाणे=नंगे पैरों
पासडियाँ=पास, समीप
पासी =फाँसी
पिटारा =पेटी
पिंडमाँसूँ=शरीरमेंसे
पिंडरोग =पाण्डुरोग, पीळिया, शरीरमें रोग
पिय,पिव=प्रियतम श्रीकृष्ण
पीपाकूँ =राजा पीपाजीको
पीहरिये=नैहर
पुरबली=पूर्व जन्मकी
पुराणी =पुरानी
पूँची =पहुँची, हाथका गहना

पूरौ =पूरी कीजिये
पेट्याँ =पेटीमें
पेश =समर्पण, पेश
पैंड-पैंड =पद-पदपर
पैरूँगी =पहनूँगी
पोति =माला
पोळ =दरवाजा
पौढूँगी =सोऊँगी

फ

फाटी =फटी हुई
फाँसड़ियाँ=फाँसी, फन्दा
फूलड़ियाँ =जूतियाँ

ब

बखेरूँ =बिखरा दूँगी
बगसण-हार =क्षमा करने-वाला
बृच्छनमें =वृक्षोंमें
बजंता ढोल =बजते हुए ढोलोंमें
बटमार =लुटेरे
बड़भागण=बड़भागिनी
बणराइ =वृक्ष
बदीती =बीत गयी
बधावणा =बधाईके गान
बन्दी =बाँदी, दासी
बरस्यो =पानी बरसा
बळी =राजा बलि
बसियो =बस गया
बह्यो जात है=बहा जाता है
बहार खरी=बाहर खड़ी हुई
बाट जोवै =राह देखती है
बाटड़ियाँ =रास्ता
बाण =आदत
बाती =बत्ती
बादळ =बादल, मेघ
बाँदी =दासी
बाबळ =पिता

बार =देर

बालेकी =लड़कपनको

बारणे =द्वारपर

बाळपणाँ-की प्रीत = लड़कपनकी प्रीति

बालबा = पति, वल्लभ, प्रियतम

बासक =सर्प

बाँह =भुजा, हाथ

बाँहिं =भुजापर

बाँहड़ली =बाँह

बिंदली= बिन्दी, माथेकी टिकुली (गहना)

बिदारण =चीरनेवाले

बिडारण =नाश करनेवाले

बिंदो =स्तुति करे

बिथा =व्यथा, पीड़ा

बिरछ =वृक्ष

बिरियाँ =सुअवसर

बिराणे =दूसरेके

बिराणो पराया

बिलम =देर, विलम्ब

बिसरयो =भूला

बिसरूँ =भूलूँ

बिहानी =बीत गयी

बीज =बिजली

बुलाइया =बुलाया

बूझी =पूछी

बूठा =बरसे

बूड़तो =डूबते हुए

बेग =जल्दी

बेड़ो लगा-ज्यो पार = बेड़ा पार लगाइयेगा

बेर-बेर =बार-बार

बेसी रहे =बैठे रहते हैं

बैना =वचन

बैदाँ =हे वैद्य !

बैरागण =बैरागिनी
बोल्या =बोले
बौराइ =पागलपन
बौपार =व्यापार

भ

भई =हुई
भगवाँ =गेरुआ वस्त्र
भजनकूँ =भजनको
भगतबछल=भक्तवत्सल
भगत =भक्त
भया =हुआ
भ्रम भ्रम आयो =भटक-भटक आया
भलाँ ही पधार्‌या =भले पधारे
भवमें =जगत्‌में
भाखत =कहते हैं
भवैया=नाचनेवाला, भाँड
भादरवै =भादोंमें
भावै =सुहाता
भीजूँ =भींगती हूँ
भीलणी =भीलनी
भुजंग =साँप
भुजंगम =सर्प
भोजनियाँ =भोजन
भोम =पृथ्वी
भौसागर =भवसागर

म

मग जोवत =राह देखते
मंगसर =अगहन
मघवा =इन्द्र
मतलबके गरजी=स्वार्थी
मँदभागण =मन्दभागिनी
मनुआँ =मन
मरम =रहस्य
मरजादा =मर्यादा
महलाँ =महलोंमें
महरि =कृपा
म्हाँके हमारे, मेरे
म्हाँने =हमें, मुझको

म्हाँमे =मुझमें
म्हारी =हमारी, मेरी
म्हाँरू =हमारा, मेरा
म्हारे =हमारे, मेरे
म्हाँरो =हमारा
म्हासूँ =हमसे, मुझसे
म्हास्यूँ =हमसे, मुझसे
मावै हो =समाता है
म्रिगी =हरिणी
मिंत =मित्र
मिलणरो =मिलनेका
मिलणा =मिलना
मिल बिछड़ो मत कोय = मिलकर कोई न बिछुड़े
मिलियाँ =मिलनेसे
मुखद्वारा =मुखके
मुखाँ =मुखसे
मुगट-सिरोमणि = मुकुट-शिरोमणि

मुरार = मुरारि श्री-कृष्णभगवान्
मुँहगो =महँगा
मुकीने =छोड़कर
मूँदड़ी =अँगूठी
मेटण =मिटानेवाले
मेळा =मिलन, भेंट
मेलो =बैठा दो
मेह =बादल, वर्षा, मेघ
मोतियनको=मोतियोंकी
मोतीडाँरो हार = मोतियोंका हार
मोय =मुझे
मोर-मुगट=मोरमुकुट

र

रथवान =सारथी
रमइया =राम, प्रियतम
रमवा =खेलने
रमता =खेलते हुए
रळी =उत्सव, खुशी

रसियो =रसिक, प्रेमी
रह्योइ न जाय } =रहा ही नहीं जाता
राखणवालो=बचानेवाला
राखड़ी =चूड़ामणि
राखल्यौ नैरी } =अपने पास रख लीजिये
राठोड़ाँरी=राठौरोंकी
राती =लाल हो गयी
रावरी =आपकी
राळेली पाँख मरोड़ } =पाँख तोड़ डालेगी
रिखिपतनी=ऋषिपत्नी, अहल्या
री =की
रूठ्यो =रूठ गया
रूड़ो =अच्छा
रूपा =चाँदी
रूम-रूम =रोम-रोम
रैण =रात
रैणा =रात
रैना =रात
रोकणहार =रोकनेवाला
रोवत-रोवत=रोते-रोते

ल

लख चौरासी } =चौरासी लाख योनियाँ
लपटास्याँ =लपटावेंगी
लपटीली =रपटीली, फिसलाहटवाली
लाखका =लाख रुपयेकी कीमतका
लाजाँ मरे छै=लाज मरते हैं
लाँघण =लंघन, अनशन
लुकाय =छिपी हुई
लूण =नमक
लूण अलूणो } =नमक या बिना नमकका ही
ल्यूँ =लूँ
लेताँ =लेते

लोकड़ियाँ =लोग

लोय =लोग

व

वर हीणो=अपना (दूसरेसे किसी बातमें)

हीन पति

व्हालो =प्यारा

वारणै =न्योछावर कर दूँ

वार डारूँगी } =न्योछावर कर दूँगी

वाँरो =उनका, अपना

स

संगतकर साधरी } =साधुओंकी संगति करके

सगा, सगो=अपना

सजनी =सखी

संजोइ =सजाकर

सदकै =समर्पण

सनेस =स्नेह, प्रेम

सनेसड़ा =सन्देशा

सनेसो =सन्देशा

सबने लगूँ कड़ी } =सबको बुरी लगती हूँ

समँद =समुद्रमें

समँद सूँ सीर } =समुद्रसे सम्बन्ध

सरब सुधारण } =सब सुधारनेवाला

सरवरियाँरी=सरोवरकी

सरसी =उत्तम

सरै =काम चल सकता

संदेस =प्रेम

समुँदमें =समुद्रमें

सवायो =बढ़कर

सवेरा =शीघ्र

संसा-सोग-निवार } संशय-शोकको मिटानेवाले

सहेल्याँ =सखियो !

सह्यो तो सह्यो=सहे तो सहे

साग=साधारण साग-पात		सिसोद्याँरे	=सीसोदियोंके
सागी	=वही	सी	=जैसी
साँचे	=सच्चे	सीधारताँ	=जाते
साजनियाँ=स्वजन, सगे		सीर	=सिर, मस्तक
साधाँ संग=साधु-संगमें		सीलबरत	=शीलव्रत
साँभळे	=सुन लेगी	सील संतोख	=शील-सन्तोष
सामी	=सामने	सुखमणा	=सुषुम्ना नाड़ी
सावण	=श्रावण	सुण पावेली=सुन पावेगी	
साँवरा	=श्रीकृष्ण	सुणी छे	=सुनी है
साँवळ	=श्रीकृष्ण	सुणो	=सुनिये
साँवळिया=साँवरा, श्रीकृष्ण		सुधारण काज	=काम सुधारने-वाले, काम सुधारनेके लिये
साँसड़ियाँ=श्वास			
सासरिये =ससुरार			
सिंघासण =सिंहासन		सुरति=स्मृति, प्रभुकी स्मृति	
सिणगार =शृंगार		सुहँगो	=सस्ता
		सूखूँ	=सूखी जा रही हूँ
सिरदार	=सामन्त	सूनो	=शून्य, निर्जन
सिवरी	=शबरी भिलनी	सोय	=सो रही
सिळाम	=प्रणाम	सोवण	=सोना

ह

हळाहळ =ज़हर

हाळयाँ-मोळयाँसूँ = नौकर-चाकरोंसे

हियेमें =हृदयमें

हिरदा =हृदय

हिवड़ो =हृदय

हिवड़ारो =हृदयके

हीया =हृदय

हीराँरा पारखी = हीरोंकी परीक्षा करनेवाले, जौहरी

हेरी =अरी

हेलाँ =पुकार

होता जाज्यो = होते जाइयेगा

होय =होगा

होसी =होगा

सहजोबाई

कूरा =झूठा

छिमा =क्षमा

जिमींमें =जमीनमें

टहलुआ =नौकर

तीछन =तीक्ष्ण

तैंडे =तेरे

दरब =द्रव्य, धन

दिष्टि =दृष्टि

निहचै =निश्चय

पछ =पथ्य

परगास =प्रकाश

बाजी=बाजीगरका खेल

बाद करन्ते=विवाद करनेवाले

बादवान =विवाद

बोहित =नाव

लखलैनी =देख ले

साईं =स्वामी, ईश्वर

हजूर =पास

ह्याँपै =यहाँपर

मञ्जुकेशी

किरातिन =भिलनी पेरे =प्रेरित किये हुए

कोह-मोह =क्रोध-मोह

गगनागारे=स्वर्गमें बैरे =जलता है

चौरासीके फेरे = { चौरासी लाख योनियोंके चक्करमें } बिहाना =सवेरा

बनीठनी

आभा =आकाश निस =रात्रि

काँखड़ियाँ=बगल

किण जतना=किस प्रकार पाँखड़ियाँ=पंखुड़ियाँ

कुंजाँ-कुजाँ=कुञ्ज-कुञ्जमें माँखड़ियाँ=मक्खियाँ

जलधर =बादल सारा =सब

झालो दे छे } हाथके इशारेसे बुलाते हैं हरियातरवर=हरे-भरे वृक्ष

प्रतापबाला

किरोरें =करोड़ों वारी =बलिहारी

थारा =आपके

मुखड़ाँरी=मुखकी वारूँ =न्योछावर करूँ

युगलप्रिया

अनुचरी	=दासी, सेविका	बिरहाग	=विरहकी अग्नि
अलि	=भौंरा	बिलम	=देर
आली	=सखी	मधूकरि	=रोटीका टुकड़ा
एती	=इतनी	मनसा	=मनोकामना
कीर	=तोता	मेहु	=वर्षा
खोट	=भूल, दोष	रोचन	=गोरोचन
चपला	=बिजली	विपिन-बृन्दा	=बृन्दावन
चितेरे	=चित्रकार	सुरतिय	=देवस्त्रियाँ
छारा	=राख	सेत	=सफेद
ढाढ़ी	=मंगल गानेवाले	हरद	=हल्दी
पिक	=कोयल		

रानी रूपकुँवरि

उडुगण	=तारा	दृग	=आँखें
कुबान	=बुरी आदत	सरितन	=नदियोंमें
घनेरौ	=बहुत	सौरी	=शबरी
जेवरी	=रस्सी		

रामप्रिया

अगोचरम्=इन्द्रियप्रत्यक्ष न होनेवाले

अद्वैत=जिनके सिवा दूसरा कोई नहीं है

अरिगंजन=शत्रुका नाश करनेवाले

जगत-मंडन=जगत्के शोभास्वरूप

त्रैताप-खंडन = तीनों तापोंको मिटानेवाले

ध्यानगम्य=ध्यानमें दर्शन देनेवाले

मोक्षप्रद =मोक्ष देनेवाले

बिदारक =नष्ट करनेवाले



"कल्याण" धार्मिक मासिक पत्र

(हर महीनेमें २७१०० छपता है)

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और धर्म-सम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र, सालभरमें १६०० पेज, सैकड़ों सुन्दर चित्र, मूल्य ४=), वर्षके आदिमें एक विशेषांक भी निकलता है, जो ग्राहकोंको इसी मूल्यमें मिल जाता है। प्रारम्भसे अबतक १० विशेषांक निकल चुके हैं। उनमेंसे नीचे लिखे इस समय प्राप्य हैं—

१ भक्ताङ्क–पृ०२७६,चित्र५५,मू०१॥)स० १॥।≡)
२ रामायणाङ्क–पृ०५१२,चित्र१६७,२॥≡)स०३≡)
३ योगाङ्क–दशवें वर्षका नवीन विशेषांक,पृ०८८४, चित्र४७०,मू० ३॥), स० ४), पूरी फाइल ४≡)
४ वेदान्ताङ्क–(११ वें वर्षका) दर्शनीय विशेषांक पृ० ७४४, चित्र १९१, मू० ३) सजिल्द ३॥)

अगले श्रावणमें अनेक चित्रोंसहित नवीन विशेषांक 'संतांक' निकलनेवाला है।

(डाकखर्च सबमें हमारा)

आप भी ग्राहक बनकर घर बैठे सत्संग कीजिये! मित्रोंको उपहार दीजिये और संग्रह करिये।

कल्याणका सुन्दर संस्करण अंग्रेजीमें भी निकल रहा है, इसके भी चार विशेषांक निकल चुके हैं।

(इन सबमें बाहरका विज्ञापन भी नहीं रहता)

व्यवस्थापक–कल्याण-कार्यालय, गोरखपुर